thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 18 जनवरी 2015

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार 18 जनवरी 2015 से 24 जनवरी 2015

मा.कृ. 13 ● वि० सं०–2071 ● वर्ष 79, अंक 140, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 191 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,115 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. गया में महात्मा आनंद स्वामी ब्लॉक का उद्घाटन हुआ

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, कैंट एरिया, गया के नवनिर्मित भवन महात्मा आनंद स्वामी ब्लॉक (किड्स ग्लेक्सी) का उद्घाटन आर्यरत्न माननीय श्री पूनम सूरी जी, प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्त समिति एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के कर –कमलों द्वारा किया गया।

इस अवसर पर दिल्ली से डी.ए.वी पब्लिक स्कूल्स, के निदेशिका श्रीमती निशा पेशिन, श्री सत्यपाल आर्य, सचिव, सह मंत्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, श्रीमती ऋतु गुप्ता, प्रेमलता गर्ग, तथा बिहार और झारखंड स्थित डी.ए.वी. पब्लिक विद्यालयों के क्षेत्रीय निदेशकगण, प्राचार्यगण गया शिक्षकगण एवम् छात्र–छात्राएँ उपस्थित थे।

महात्मा आनंद स्वामी ब्लॉक (किड्स ग्लेक्सी) में तीन/ढाई फीट के ग्रेनाइट पत्थर पर महात्मा आनंद स्वामी जी का चित्र, उनकी जीवनी तथा उद्घाटन का अभिलेख स्वर्णाक्षरों में खुदवाया गया था। प्राचार्य श्री एच. एन. झा ने उनकी जीवनी को पढ़कर सुनाया। उन्होंने कहा कि महात्मा आनंद स्वामी डी.ए.वी. आन्दोलन के पोषक एवम् आर्य समाज के महान विभूति थे। उनके जीवन को यादगार बनाने के लिउ ही इस नवनिर्मित भवन (किड्स ग्लेक्सी) का नामकरण उनके नाम पर किया गया है।

डी.ए.वी.आर.के पुरम के पूर्व–छात्र अपनी मातृ संस्था में

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के प्रागंण में भूत पूर्व छात्रों के आगमन पर हवन का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् अक्षत द्वारा उन्हें आशीर्वाद दिया गया। छात्र अपनी यादों को ताज़ा करने के लिए अपनी पुरानी कक्षाओं में गये। अपने मित्रों के साथ बिताये हुए पलों का स्मरण कर आनन्द की अनुभूति करते हुए आपस में चर्चा करते रहे।

छात्रों ने विद्यालय में हुए बदलाव की प्रशंसा करते हुए उन्नति को सराहा। छात्रों के मनारंजन के लिए खेलों का आयोजन किया गया था। छात्र व अध्यापकों ने संगीत का आनन्द उठाया।

कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों के लिए खान–पान की व्यवस्था की गईथी। नववर्ष की शुभकामनाएँ देते हुए विदाई हुई।

डी.ए.वी. कॉलेज फिरोज़पुर का 37वाँ दीक्षान्त समारोह सम्पन्न हुआ

स्वामी दयानन्द के दिखाए मार्ग पर चलने का संदेश दिया गया

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, नई दिल्ली के प्रधान माननीय श्री पूनम सूरी जी की प्रेरणा से कॉलेज की प्राचार्या डॉ. पुष्पिंदर वालिया के मार्गदर्शन में कॉलेज के सैतीसवें दीक्षान्त समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह के मुख्यातिथि थे प्रिंसिपल डॉ. शिरीष चिधाडे, असैसर, नैक पीयर टीम। मुख्यातिथि द्वारा दीप–प्रज्ज्वलन उपरान्त वेदमंत्र गायन तथा डी.ए.वी. गान से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। सर्वप्रथम प्राचार्या डॉ. पुष्पिंदर वालिया ने प्रिंसिपल डॉ. शिरीष चिंधाडे का अभिनन्दन किया। तत्पश्चात् उन्होंने सत्र 2011–12 व सत्र 2012–13 की विभिन्न शैक्षिक, सांस्कृतिक व पाठ्येत्तर उपलब्धियों पर वार्षिक रिर्पोट प्रस्तुत की। उन्होंने कॉलेज के स्नातकों व परास्नातकों को एक उच्चकोटि के आलोचक, लेखक व विद्वान प्रिंसिपल डॉ. शिरीष चिंधाडे से डिग्री प्राप्त करने के लिए बधाई दी। डॉ. शिरीष चिंधाडे ने अपने दीक्षान्त भाषण में छात्राओं को पुस्तकीय ज्ञान के साथ जीवन के व्यावहारिक ज्ञान को बुद्धिमता से प्रयोग करने की प्रेरणा दी। समारोह में आर्ट्स, कामर्स व कम्प्यूटरज संकाय के स्नातकों व परास्नातकों को मुख्यातिथि के द्वारा डिग्रियां प्रदान की गयीं। इस अवसर पर स्थानीय समिति के सदस्य, कॉलेज का समस्त स्टाफ व विद्यार्थी उपस्थित हुए। राष्ट्रीय गान के साथ दीक्षान्त समारोह सफलतापूर्ण सम्पन्न हुआ।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 18 जनवरी, 2015 से 24 जनवरी, 2015

मनोबल, सत्य, यश, श्री

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

मनसः काममाकूतिं, वाचः सत्यमशीय।
पशूनां रूपमन्नस्य रसो, यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा।।

यजु ३९.४

ऋषिः **ब्रह्मा**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● **(मनसः)** मन की **(कामं)** इच्छा–शक्ति को [तथा] **(आकूतिं)** संकल्प–शक्ति को [और] **(वाचः)** वाणी के **(सत्यं)** सत्य को **(अशीय)** प्राप्त करूं। **(पशूनां)** पशुओं का **(रूपं)** रूप, **(अन्नस्य)** अन्न का **(रसः)** रस, **(यशः)** कीर्ति [और] **(श्रीः)** श्री **(मयि)** मुझमें **(श्रयतां)** स्थित हो। **(स्वाहा)** एतदर्थ आहुति देता हूं, सत्क्रिया करता हूं।

मैं चाहता हूं कि मैं एक उत्कृष्ट मानव बनूं, मेरे अन्दर विविध शक्तियाँ अपने पूर्णरूप में निवास करें। मेरे मन के अन्दर प्रबल इच्छा शक्ति (काम) और संकल्प शक्ति (आकूति) हो। मानव इच्छाएं करता रहता है, परन्तु वे पूर्ण नहीं होतीं, यह इच्छा शक्ति की दुर्बलता का चिन्ह् है। योगी जन बताते हैं कि इच्छा शक्ति को बलवान् बना लेने पर मनुष्य जो इच्छा करता है वह पूर्ण होकर रहती है। वह इच्छा करता है कि अमुक पापी धर्मात्मा बन जाए, या अमुक रोगी का रोग दूर हो जाए, तो सचमुच वैसा ही हो जाता है। मन की दूसरी शक्ति संकल्प शक्ति है। संकल्प की दृढ़ता होने पर मनुष्य अपने व्रत से च्युत नहीं होता। जो व्रत एक बार धारण कर लेता है, अन्त तक उसका निर्वाह करता है। यदि वह संकल्प करता है कि मैं आज से ब्रह्मचारी रहूंगा, तो उस पर दृढ़ रहता है। यदि वह संकल्प करता है कि मैं आज से धूम्रपान करना छोड़ता हूं, तो सचमुच उसका यह व्यसन छूट जाता है। इसके विपरीत जिनमें संकल्प शक्ति की दृढ़ता नहीं होती, वे नित्य नवीन–नवीन संकल्प करते हैं, और किसी न किसी बहाने उन्हें तोड़ते रहते हैं।

मेरी यह भी कामना है कि मेरी वाणी में सत्य हो। वाणी में सत्य तभी आ सकता है, यदि मन में भी सत्य हो। यदि मन में सत्य होगा, तो वह कर्म में भी आयेगा। इस प्रकार मनसा, वाचा, कर्मणा मैं सत्यमय हो जाऊं, यह मेरी आन्तरिक अभिलाषा है। पतंजलि मुनि ने कहा है कि जिसके अन्दर सत्य प्रतिष्ठित हो जाता है, उसे क्रिया–फलाश्रयत्व प्राप्त हो जाता है, उसकी वाणी अमोघ हो जाती है। उसकी वाणी से दिये गये आशीर्वाद सत्य सिद्ध होते हैं। मेरी वाणी में भी यह दिव्य शक्ति आये।

मेरी यह भी अभिलाषा है कि मुझे गाय आदि दुधारू पशुओं का दूध यथेच्छ मात्रा में मिले, जिससे उसके सेवन से प्राप्त होनेवाला सौन्दर्य मुझमें आये। मुझे सात्विक अन्नों से मिलनेवाला रस–रक्त भी प्राप्त हो। मुझे धर्म और सत्कर्म से प्राप्त होनेवाली कीर्ति भी मिले और मेरी श्री, मेरी शोभा, दिग्दिगन्त में फैले। उक्त सब कामनाओं और आदर्शों की पूर्ति के लिए 'स्वाहा' हो, सत्क्रियाओं और सत्यप्रयासों की निरन्तर आहुति पड़ती रहे।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

एक ही रास्ता

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में बात हो रही थी कि 'ओ३म्' की तीन मात्राओं की उपासना कैसे होती है। तीन साधनों का वर्णन करते हुए बताया कि तप का अर्थ है शारीरिक साधना, ब्रह्मचर्य का अर्थ है मानसिक साधना, और श्रद्धा का अर्थ है आत्म–साधना।

स्वाध्याय के संदर्भ में बताया कि विभिन्न ग्रंथों को प्रतिदिन पढ़ना स्वाध्याय है। यह स्वाध्याय का केवल एक अर्थ है। दूसरा अर्थ है अपने आपको पढ़ना और अपने आपको देखना कि यह जो अपना–आपा है, यह ऊपर चला जा रहा है या नीचे गिर रहा है? शुद्ध और पवित्र हो रहा है या गंदा और मलीन।

यह अपना–आपा है क्या? यह स्थूल शरीर नहीं जिसे हम प्रतिदिन मांजते हैं और अंत में वह मिट्टी में मिल जाता है। आत्मा भी नहीं, क्योंकि वह न मैली होती है न साफ, अपितु इन दोनों के साथ खड़ा सूक्ष्म शरीर जो जन्म–जन्म से आत्मा के साथ चला आ रहा है, जन्म–जन्म तक इसके साथ चलता रहेगा।

ये चार वस्तुएं हैं जिनसे मन मलीन होता है—माँस, शराब, जुआ और पराई स्त्री या पराए पुरुष के साथ संबंध। ये चारों बातें मनुष्य को मार डालती हैं। इतना मैला कर देती हैं कि फिर इसे शुद्ध करने में वर्षों लग जाते हैं। स्वाध्याय का अर्थ यह है कि प्रतिदिन अपने सूक्ष्म शरीर की किताब को देखो कि इन चारों में से कोई बात तो इनमें नहीं लिखी गयी? यदि लिखी गयी है तो संभलो। जो प्रतिदिन पढ़ता है, प्रतिदिन देखता है, वह कभी न कभी संभलता अवश्य है।

अब आगे...

अरे, यह क्रोध बुरी बला है। सवा करोड़ नहीं, सवा अरब गायत्री का जाप कर लें, एक बार का क्रोध इसके सारे फल को नष्ट कर देता है।

विश्वामित्र वास्तव में बहुत क्रोधी थे। क्रोध में उन्होंने सोचा, ' मैं इस वसिष्ठ को मार डालूँगा, फिर मुझे महर्षि की जगह राजर्षि कहने वाला कोई रहेगा नहीं।' ऐसा सोचकर एक छुरा लेकर, वे उस वृक्ष पर जा बैठे जिसके नीचे बैठकर महर्षि वसिष्ठ अपने शिष्यों को पढ़ाते थे। शिष्य आये; वृक्ष के नीचे बैठ गये। वसिष्ठ आये; अपने आसन पर विराजमान हो गये। शाम हो गई। पूर्व के आकाश में पूर्णमासी का चाँद निकल आया। विश्वामित्र सोच रहे थे, 'अभी सब विद्यार्थी चले जाएँगे, अभी वसिष्ठ अकेले रह जायेंगे, अभी मैं नीचे कूदूँगा, एक ही वार में अपने शत्रु का अन्त कर दूँगा।' तभी एक विद्यार्थी ने निकले हुए चाँद की ओर देखकर कहा, "कितना मधुर चाँद है वह कितनी सुन्दरता है" वसिष्ठ ने चाँद की ओर देखा; बोले, "यदि तुम ऋषि विश्वामित्र को देखो तो इस चाँद को भूल जाओ। यह चाँद सुन्दर अवश्य है परन्तु ऋषि विश्वामित्र इससे भी अधिक सुन्दर हैं। यदि उनके अन्दर क्रोध का कलंक न हो तो वे सूर्य की भांति चमक उठें।" विद्यार्थी ने कहा, "महाराज! वे, तो आपके शत्रु हैं। स्थान–स्थान पर आपकी निन्दा करते हैं।" वसिष्ठ बोले, "मैं जानता हूँ, मैं यह भी जानता हूँ कि वे मुझसे अधिक विद्वान हैं, मुझसे अधिक तप उन्होंने किया है, मुझसे अधिक महान् हैं वे मेरा माथा उनके चरणों में भटकता है।"

वृक्ष पर बैठे विश्वामित्र इस बात को सुनकर चौंक पड़े। वे बैठे थे इसलिए कि वसिष्ठ को मार डालें और वसिष्ठ थे कि उनकी प्रशंसा करते नहीं थकते थे। एकदम वे नीचे कूद पड़े, छुरे को एक ओर फेंक दिया, वसिष्ठ के चरणों में गिरकर बोले, "मुझे क्षमा करो!"

वसिष्ठ प्यार से उन्हें उठाकर बोले, "उठो ब्रह्मर्षि!"

विश्वामित्र ने आश्चर्य से कहा, " ब्रह्मर्षि? आपने मुझे ब्रह्मर्षि कहा? परन्तु आप तो यह मानते नहीं हैं?"

वसिष्ठ बोले, "आज से तुम ब्रह्मर्षि हुए। महापुरुष! तुम्हारे अन्दर जो चाण्डाल था, वह निकल गया।" यह है सत्संग का जादू!

लाहौर में रहते थे एक छज्जू भगत। कई लोगों ने इनका चौबारा देखा होगा। एक दिन वे अपने उस चौबारे में बैठे थे; कुछ और लोग भी उनके साथ थे। नीचे फल बेचनेवाला एक आदमी आया। आवाज़ देकर उसने कहा, "अच्छे संगतरे! अच्छे संगतरे भाई, अच्छे!" छज्जू अपने साथियों की ओर देखकर बोले, "सुनते हो यह आदमी क्या कहता है?" साथियों ने कहा, "संगतरे बेचता है भगत जी!" भगत जी बोले, "तुम समझे नहीं, ध्यान

thearyasamaj.org

से सुनो! वह कहता है, 'अच्छे संग–तरे'– जो अच्छे लोगों का संग करता है वह तर जाता है।" यह है सत्संग की महिमा! मानसिक साधना के लिए यह दूसरी आवश्यक बात है। तीसरी बात है सेवा। परन्तु सेवा का अर्थ क्या है? तीन प्रकार की शक्ति मनुष्य के पास होती है– बाहु–बल, बुद्धि–बल और धन–बल। इस शक्ति को केवल अपने लिए नहीं अपितु दूसरों की भलाई के लिए भी प्रयोग करना, यह सेवा है। महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के नियमों में यह बात स्पष्ट रूप में लिखी है; यह भावना कूट–कूटकर भरने का यत्न किया; उन्होंने कहा, "संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।"

आर्यसमाज केवल इस देश के लिए नहीं है; सभी देशों के लिए है; किसी एक राष्ट्र के लिए नहीं; सभी राष्ट्रों के लिए है। आर्यसमाज न धर्म है, न सम्प्रदाय। वह एक आन्दोलन है, जिसका उद्देश्य है– मनुष्य को सुखी बनाना; जितनी शक्ति हमारे पास है, उसे दूसरों की भलाई में खर्च कर देना। इसलिए महर्षि ने आर्यसमाज के नियमों में लिखा, प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए, अपितु दूसरों की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।"

यह है सेवा की भावना! सेवा में मन बहुत जल्दी शुद्ध होता है; अभिमान मिट जाता है। इससे पाप मिट जाता है। इसलिए जितनी भी शक्ति है, उसके अनुसार अपने जीवन में सेवा करो। और कुछ नहीं कर सकते तो अपने मुहल्ले के बच्चों को इक्ट्ठा करके उन्हें पढ़ने में मदद दो। पढ़ा नहीं सकते तो उन्हें दौड़ना सिखाओ, परेड करना, बैठना, खाना–पीना सिखाओ। यह भी नहीं कर सकते तो उन्हें सभ्यता से उठना–बैठना, खाना–पीना सिखाओ। यह भी नहीं कर सकते तो आर्यसमाज मंदिर में आ जाओ, अपने हाथ से यहाँ झाड़ू दो, लोगों ने जूते सँभालने की सेवा करो। यह भी न हो सके तो बाज़ार में चले जाओ; जहाँ केले की दुकान है, वहाँ खड़े हो जाओ। लोग दुकान से केले लेते हैं, वहीं छीलकर उसे खाते हैं, छिलकों को सड़क पर फेंक देते हैं; तुम इस छिलके को उठाकर एक ओर रख दो जहाँ वह किसी के पैर के नीचे न आए, किसी के फिसलने का कारण न बने। साधारण–सी बात लगती है यह, परन्तु केले का छिलका ग़लत स्थान पर पड़ा हो तो कैसा भयानक परिणाम उत्पन्न करता है, यह तो मैंने देखा। रुड़की में एक सज्जन रहते थे। उनकी घरवाली बहुत बीमार थी। घर से शीशी लेकर वे डॉक्टर साहब के पास गये कि जल्दी से दवा लाकर पत्नी को पिलायें। दौड़े हुए चले जाते थे कि रास्ते में कैले का एक छिलका पाँव के नीचे आ गया, उस पर से फिसले, सड़क पर जा गिरे हाथ की शीशी टूट गई, टूई हुई शीशी गर्दन में लगी, बड़ी नस कट गई, वहीं मर गये। यदि उस छिलके को किसी ने उठा लिया होता तो एक आदमी की जान बच जाती। सेवा छोटी हो या बड़ी, सदा महान् होती है।

आर्यसमाज देश के अन्दर बढ़ा तो निश्चित रूप से इसलिए कि उसने सेवा के कार्य को अपनाया। जहाँ–कहीं, जब–कभी, जो–कोई कष्ट हुआ, वहाँ आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता पहुँच गए। भूचाल आए या बाढ़ या बलवा हो जाए, आग लग जाए या पानी फट पड़े, आर्यसमाज के सेवक वहाँ पहुँचते। काँगड़े का भूचाल मुझे याद है। मैंने भी वहाँ कुछ कार्य किया, मैंने भी टोकरी उठाई। सन् 1905 में पृथिवी वहाँ पर हिली, पहाड़ हिले, चट्टानें हिलीं, धरती का सीना फट गया, मकान गिरे, यात्री उनमें दब गए, पुजारी उनमें दब गए। आर्यसमाज सबसे पहली संस्था थी, जिसे अपने स्वयंसेवकों को वहाँ भेजा। डी.ए.वी. कॉलिज के विद्यार्थी वहाँ गए, झोपड़ियाँ बनाईं। उन्होंने सेवा का कार्य आरम्भ कर दिया। बीकानेर में अकाल पड़ा तो स्वर्गवासी लाला लाजपतराय जी और महात्मा हंसराज जी वहाँ पहुँच गए। गाँव–गाँव में सहायता केन्द्र खोल दिये। स्थान–स्थान पर कार्य होने लगा। इसी प्रकार हर स्थान पर कार्य हुआ, चाहे कोयटे का भूकम्प हो या मालाबार का हत्याकाण्ड, एबटाबाद का फ़िसाद हो या कोहाट का बलवा। छत्तीसगढ़ उड़ीसा के अन्दर, बिहार के अन्दर, हर जगह, हर बार आर्यसमाज इस प्रकार पहुँचा जैसे सेवा ही उसका परम उद्देश्य है। हर जगह पहुँचकर इसने सेवा की। मेरा सौभाग्य था कि मुझे इनमें से प्रत्येक स्थान पर जाने का अवसर मिला। पूज्य महात्मा हंसराज जी ने हर स्थान पर भेजा। प्रत्येक स्थान पर सेवा करते हुए मैंने देखा कि इस कार्य से कितनी प्रसन्नता होती है! मन कितना निर्मल होता है! बिहार में भूकम्प आया तो मैं कलकत्ता में था। महात्मा हंसराज जी का तार वहाँ पहुँचा कि बिहार पहुँचो, देखो कि सहायता और सेवा का कार्य कैसे करना है। पं. ऋषियराम जी को और सेठ दीपचन्द जी पोद्दार के परिवार के श्री आनन्दीप्रसाद को साथ लेकर मैं बिहार पहुँचा। मुँगरे के नगर में जाकर देखा कि वहाँ हज़ारों लोग दब गये हैं। दोपहर के समय भूचाल आया। दुकानें खुली थीं, ग्राहक दुकानों से सामान खरीद रहे थे, भूकम्प ने सबको गिरती दीवारों और छतों के नीचे दबा दिया; दुकानदार भी दब गए, ग्राहक भी। मलवे को हटाने का कार्य आरम्भ हुआ तो पहले दिन काफ़ी लोग जीवित निकले, कुछ घायल, कुछ सिसकते हुए, कुछ ठीक। तीसरे और चौथे दिन भी कुछ लोग जीवित निकले, बाकी केवल लाशें। ज्यों–ज्यों दिन बीतते गए, ज्यों–त्यों लाशें मिलने लगीं; परन्तु सौलहवें दिन एक मकान का मलवा उठाया गया तो एक आदमी बिल्कुल अच्छा–भला, बिल्कुल अच्छा–भला, बिल्कुल जीवित निकल आया। उसे देखकर हम कुछ आश्चर्यचकित हुए। किस प्रकार ईश्वर–विश्वास हमारे हृदयों में झूम के जाग उठा, यह तो हम ही जानते हैं। हमने उससे पूछा कि तू इतने दिन जीवित कैसे रहा? वह बोला, "मैं कैले बेचता हूँ। केलों का ढेर अपने पास रक्खे बैठा था कि पृथिवी हिल उठी। छत का शहतीर मेरे आ गिरा, बाकी छत उसके ऊपर आई, इसलिए मुझे चोट नहीं लगी। तभी एक बार पृथिवी हिली, मेरे ऊपर गिरे मलबे में से एक ओर से हवा आने लगी, पता नहीं किस ओर से, परन्तु उस हवा ने मुझे मरने से बचा दिया। तभी पृथिवी एक बार फिर हिली, दुकान का फ़र्श टूट गया, उससे पानी उछल पड़ा। इतने दिनों तक मैं उस पानी को पीकर और केले खाकर जीवन व्यतीत करता रहा। कल केले समाप्त हो गए, आज पानी थोड़ा रह गया, मैंने समझा मैं बचूँगा नहीं, परन्तु तभी मलवे के ऊपर कुदालों की आवाज़ आने लगी। आपने मुझे बाहर निकाल लिया।" उस व्यक्ति को देखकर मेरे हृदय ने पुकारकर कहा–

शेष अगले अंक में....

डॉ. उमाकान्त उपाध्याय की कमी महसूस होती रहेगी

डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे

आर्य समाज के शीर्षस्थ विद्वानों में जिनका नाम सदा अग्रणी रहता था उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर अत्यन्त दुःख हुआ। लगभग 80 वर्षों से भी अधिक श्री उपाध्याय जी के लेखों से आर्य जनता अवगहित होती रही है। वे प्रत्येक विषय के ज्ञाता थे। चाहे इतिहास हो अध्यात्म संस्कृति या राजधर्म हो आपने हर क्षेत्रमें अपनी लेखनी उठाई है। वे एक अच्छे वक्ता भी थे। हैदराबाद के वैदिक संसस में मैं और पं. उपाध्याय जी वक्ता के रूप में आमन्त्रित थे। पं. उमाकान्त जी ने आर्यसमाज की तीसरी पीढी की शोभा बढ़ाई है। आपके विचारों से हिन्दू और आर्य युवक प्रबोधित हुआ है। आपका साहित्य नवयुवाओं को प्रेरणा देता रहेगा। ऐसा मुझे विश्वास है।

(डा. उमाकान्त जी के आकस्मिक निधन पर 'आर्य जगत्' परिवार हार्दिक शोक प्रकट करता है–सम्पादक)

वैदिक प्रार्थना

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सँसृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।

यजु. 18.61

O Lustrous Lord,
kindle the fire within us
which may burn all evil
and give us strength
to make sacrifice for
the meek and the weak
and save them from
the evil oppressors.

अग्नि जागो, अग्नि जागो; आग हम सब में जगाओ।
हम करें बलिदान, जिससे लोक यह, वह लोक सुधरे।
सह सकें हम कष्ट, जिससे अबल और अबोध जन सब
शक्तिशाली शोषकों से त्राण पायें।

thearyasamaj.org

शिष्ट पंक्ति के व्यक्तित्व आदर्शों के प्रतीक महात्मा हंसराज

● आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा

तरणिरिज्जयति क्षेति पुष्यति न देवासः कवत्नवे।

ऋ.७.३२.६

अर्थात् विद्वान्, ज्ञानी एवं पुरुषार्थी जन ही जीतते हैं, जीतते हैं, वे ही रहते हैं, वे ही पुष्ट होते हैं, वे ही दुर्गुणों से रहित होते हैं।

वेद का यह सन्देश **मानभाजन महात्मा हंसराज जी** के जीवन का भी अंग बना। आज महात्मा हंसराज जी की १५० वां जन्म का है। उनका जन्म 19 अप्रैल सन् १८६४ में बजवाड़ा होशियारपुर, पंजाब में हुआ। उनके पिता **लाला चुन्नीलाल जी** एवं माता **गणेशी देवी** थी। हंसराज जी की प्राथमिक शिक्षा उनके गाँव में हुई। अग्रिम शिक्षा **लाहौर के मिशन हाई स्कूल** एवं **पंजाब यूनिवर्सिटी** में हुई। १८८५ में हंसराज जी ने बी.ए. तक की शिक्षा पूर्ण कर ली। महात्मा जी के जीवन का यह ऐसा अवसर था कि **प्रेय मार्ग** को अपना कर, सरकारी नौकरी करके गृह का वैभव बढ़ाते! वैभव बढ़ाने की आवश्यकता भी थी, क्योंकि फरवरी १८७६ में उनके पिता लाला चुन्नीलाल जी दिवंगत हो चुके थे, जो कि **अपील नवीस** का सरकारी अदालत में कार्य कर गृह का भरण पोषण करते थे, वह सुविधा भी समाप्त हो चुकी थी। पारिवारिक व्यवस्था हेतु मात्र उनके बड़े भाई **मुल्कराज** ही सहारा थे।

गौरवशाली संकल्प

हंसराज जी जीवन का कुछ निर्णय लेते, सरकारी नौकरी का प्रकल्प बनता, इससे पूर्व ही हंसराज जी ने लाहौर आर्य समाज के **लाला लाजपत राय, पं. गुरुदत्त एवं लाला शिवनाथ** आदि आर्य युवक भाईयों के सान्निध्य से **आर्य समाज, वैदिक धर्म, समाज सुधार** आदि के विचारों से भी भली भाँति अपने को रंग लिया था। इतना ही नहीं ३० अक्टूबर १८८३ में अजमेर नगर की भिनाय कोठी में **राष्ट्र के सशक्त हितैषी, वेदोद्धारक, वेदभाष्यकार, संस्कृति रक्षक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी** के भौतिक शरीर ने भी सदा–२ के लिए राष्ट्र से विदा ले ली थी। उन महर्षि की स्मृति एवं उनके कार्य को आगे प्रसारित करने के लिए **संस्कृत, वेदवेदांग, आर्ष ग्रन्थों** की शिक्षा के लिए **दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल व कॉलेजों** की सेवा एवं शिक्षण के दायित्व का गौरवशाली संकल्प कर डाला।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः

लाला हंसराज जी ने डी.ए.वी स्कूल व कॉलेज की सेवा का जो संकल्प लिया था, उसकी भी यह विशेषता थी कि 'विना वेतन एवं विना पारिश्रमिक के सेवा करूँगा'। ३ नवम्बर १८८५ को अपने निर्णय का पत्र महात्मा हंसराज जी ने लाहौर आर्य समाज की अन्तरंग सभा को दे दिया। यद्यपि महात्मा हंसराज जी के इस निर्णय से उनके पारिवारिक जनों को लाभ नहीं था, परन्तु समाज, देश का लाभ बहुत था। हंसराज जी ने बड़ी दृढ़ता के साथ **श्रेय मार्ग** अपना लिया। **१ जून सन् १८८६ को दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल का प्रारम्भ हुआ** जिसके संचालन, संरक्षण का कार्यभार महात्मा हंसराज जी को दिया गया, प्रथम प्रिंसिपल भी वे ही बने। उन्होंने इन संस्थानों की अवैतनिक सेवा २५ वर्षों तक की। २५ वर्ष पश्चात् 1911 में डी.ए.वी स्कूल व कॉलेज की स्थापना की **रजत जयन्ती मनायी** गई, उस समय उन्होंने अपने आचार्य पद से त्याग का संकल्प भी ले लिया। **तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः** यजुः४०/१ इस वेदाज्ञा को शिरोधार्य कर पद त्याग दिया।

शिष्ट पंक्ति के व्यक्ति

महात्मा हंसराज ने जिस समय डी.ए.वी की सेवा का संकल्प लिया, उस समय उनकी अवस्था २२ वर्ष की थी। कालान्तर में परिवार बसा, परिवार में स्वयं, पत्नी, दो पुत्र, तीन पुत्रियाँ, एवं माता सब ८ सदस्य थे। उनके संसाधनों की व्यवस्था का दायित्व था, इधर अवैतनिक सेवा का संकल्प। दोनों का सामंजस्य उनके बड़े भाई मुल्कराज जी ने बनाया, हंसराज जी ने डी.ए.वी से तो कभी भी आजीवन द्रव्य नहीं लिया। प्रतिमास अनेकों प्राध्यापकों को हजारों रूपये दिये, किन्तु स्वयं ने एक पैसा भी न लिया। बड़े भाई मुल्कराज जी ने प्रतिमास ४० रूपये देकर उनके संकल्प को दृढ़ बनाया। भाई की मृत्यु के पश्चात् उनके बलराज पुत्र ने वित्त का प्रबन्ध किया। भाई द्वारा प्रदत्त ४० रूपये की आय के द्वारा ही उन्होंने अपने परिवार की व्यवस्था की।

त्यागी, तपस्वी, मितव्ययी जनों को आयावर्त्त में शिष्ट कहा जाता रहा है। पतंजलि विरचित महाभाष्य में कहा है–

एतस्मिन् आर्यावर्ते=आर्यनिवासे ये ब्राह्मणाः कुम्भीधान्या अलोलुपा अगृह्यमाणकारणाः = किञ्चिदन्तरेण कस्याचिद् विद्यायाः पारंगताः तत्र भवन्तः शिष्टाः।

अर्थात् इस आर्यावर्त्त में जो ब्राह्मण =वेदज्ञ, घड़े भर अन्न रखने वाले, दम्भरहित, स्वतः स्फूर्त, किसी भी विद्या व शिक्षा में पारंगत होते हैं, वे पूज्य शिष्ट कहे जाते हैं।

महात्मा हंसराज इन्हीं शिष्टों की पंक्ति के व्यक्ति थे, मितव्ययिता में ही सम्पूर्ण जीवन बिताया। वे सदा आदर्शों की प्रतिमूर्ति रहे। उन्हें कोई भी कम्बल, कलमदान आदि भेंट देता, वे सब कॉलेज अथवा आर्य समाज के लिये होते।

डी.ए.वी के प्राण

सर्वप्रथम डी.ए.वी लाहौर की स्कूल के रूप में स्थापना हुई। २ वर्ष पश्चात् वह स्कूल कॉलेज रूप में परिवर्तित हो गया, इसका श्रेय महात्मा हंसराज जी के कठोर श्रम, चिन्तन व तप को ही जाता है। लाहौर के अतिरिक्त अन्य स्थानों एवं सम्पूर्ण देश में डी.ए.वी आन्दोलन को फैलाने का महात्मा जी ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। डी.ए.वी संस्थानों का कुशलता पूर्वक साहस और उत्साह के साथ निर्वहन किया।

डी.ए.वी संस्थानों के समस्त विद्यार्थियों में धर्म, वैदिक धर्म की निधि भर देने के लिए वे सदा जागरूक रहे। महर्षि दयानन्द जी से उनहोंने जो सीखा, उसे क्रियान्वित करते हुये डी.ए.वी संस्थानों का संरक्षण किया। चरित्र निर्माण के लिए वे शिक्षा का सर्वोपरि स्थान मानते थे। संध्या, उपासना, स्वाध्याय आदि कृत्यों को वे स्वयं भी नित्य करते थे और छात्रों को भी सिखाते थे कि वे सुचरित्र व उत्तम नागरिक बने, और अनेकों बनें भी। **शहीद भगतसिंह** जैसे युवक उनकी भट्टी में तपे हुए शहीद थे। जीवन की कला, देशनिष्ठा आदि से भरपूर युवक तैयार किये। **शिक्षा नरः प्रदिवो अकामकशनः** ऋ. १/५३/२, तेजस्वी शिक्षक छात्रों के विचार को कुण्ठित नहीं होने देते, वेद की इस ज्योति का महात्मा हंसराज जी ने अपने कार्य काल में पूरा ध्यान रखा।

जन्मजात संन्यासी

महात्मा हंसराज ने यद्यपि शिक्षा मिशन स्कूल में ग्रहण की थी, तथाऽपि उस मिशनरी स्कूल के उद्देश्यों व परिवेश आदि का उन पर कोई रंग न चढ़ा वे भारतीय संस्कृति के परिवेश में ही सदा रहे। उनका परिधान आजीवन श्वेत वस्त्र का ही था। कौशल, पराक्रम, इन्द्रियनिग्रह, मितभाषण आदि उनमें अनेक गुण विद्यमान थे। वे वक्ता और वैदिक धर्म प्रचारक थे। वैदिक शिक्षा के साथ–२ गणित, साईंस, अंग्रजी आदि का ज्ञान भी उन्होंने प्राप्त किया था, पर इन आधुनिक ज्ञानों के साथ अपनी सभ्यता, खान पान आदि को बहुत सुरक्षित रखा।

महात्मा जी ने अपने दायित्व को अत्यन्त सादगी, सरलता एवं कर्तव्यनिष्ठता के साथ निभाया। सुनते हैं, वे जमीन पर बैठकर कार्य करते थे। छोटे बड़े कार्य कैसे भी हों, बेहिचक उन सब कार्यों को करते रहे।

1933 में अजमेर में **महर्षि दयानन्द के निर्वाण की जब अर्धशताब्दी** मनाई गयी, उस समय बहुत से साधु संन्यासी पधारे। उन्होंने **स्वामी सर्वदानन्द जी** से प्रार्थना की, कि वे महात्मा हंसराज जी को संन्यास लेने की प्रेरणा करे, तब स्वामी सर्वदानन्द जी ने समस्त साधुओं से कहा कि वे सफेद वस्त्रों में संन्यासी हैं, उन्हें भगवा वस्त्र पहनने की आवश्यकता नहीं।

महात्मा जी का चिन्तन

महात्मा जी ने लेखन का कार्य भी किया। उनकी पुस्तकें अंग्रेज़ी व हिन्दी दोनों भाषाओं में हैं। महात्मा जी के ग्रन्थ बताते हैं कि वेद और वैदिक धर्म ही जीवन की सही धरोहर है, उनसे ही प्रकाश मिलता है।

महात्मा हंसराज जी का दृढ़तम विचार था कि जैसे सिक्ख **केश, कंघा, कटार, कच्छा** व **कड़ा** स्वरूप ५ ककार अनिवार्यतः धारण करते हैं, वैसे ही चरित्र एवं नैतिकता के लिए प्रत्येक आर्य को पाँच सकार १. संध्या २. स्वाध्याय ३. संस्कार ४. सत्संग ५. सेवा धारण करने चाहिएँ।

महात्मा जी को अपने आर्य हाने का बड़ा गर्व था और प्रत्येक आर्य के लिए भी उनका यही सन्देश था कि अपने वैदिक धर्म, आर्य नाम एवं निराकार ईश्वर की उपासना को गर्व से प्रकट करें। डी.ए.वी संस्थानों में महात्मा हंसराज जी ने अपने जीवन काल तक गणित, साईंस, अंग्रेजी आदि शिक्षा के साथ–२ धर्म, आर्य समाज, महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों की शिक्षा का पूरा संघर्ष पूर्वक प्रबन्धन किया।

सामाजिक कार्य

महात्मा हंसराज जी ने समाज में

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

thearyasamaj.org

उत्कृष्ट शङ्का समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

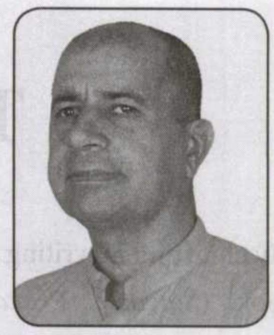

शंका–कोई व्यक्ति शादी करके मोक्ष को प्राप्त कर सकता है या नहीं? श्री राम और कृष्ण जी भी तो गृहस्थ ही थे। फिर उनको योगी क्यों कहा गया है?

समाधान– यह निर्विवाद है कि श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों क्षत्रिय थे। दोनों ने महाभारत युद्ध किया और करवाया जिसमें सैकड़ों हज़ारों लोग मरे।

● 'सत्यार्थ-प्रकाश' के पाँचवें समुल्लास में महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं कि– "मोक्ष केवल सन्यासी का होता है, और किसी का नहीं होता और सन्यास लेने का अधिकार मुख्य रूप से ब्राह्मण को है।" तो दो बातें हो गईं, **मोक्ष के लिए सन्यास ज़रूरी है और संन्यास के लिए ब्राह्मण बनना जरूरी है।**

● **अब यह बताइए कि श्रीकृष्ण जी ब्राह्मण थे या क्षत्रिय थे? क्षत्रिय थे। फिर वो बाद में संन्यासी बने या नहीं बने? नहीं बने।**

● रही बात श्रीराम और श्रीकृष्ण जी को योगी क्यों कहा गया है? इसका उत्तर है, कि वे गृहस्थ होते हुए भी योगाभ्यास (ईश्वर का ध्यान) करते थे।

● श्री कृष्ण को योगेश्वर कहते हैं। योगेश्वर का मतलब योगाभ्यास करते थे, योग-विद्या जानते थे, अभ्यास (प्रैक्टिकल) करते थे, सत्तर–अस्सी प्रतिशत तक पहुँचे। जो व्यक्ति गणित (मैथ्स) में एम.एस.सी कर लें, क्या उनको गणितज्ञ (मैथेटिशियन) नहीं कहेंगे? गणितज्ञ तो कहेंगे, पर अभी उसने मैथ्स में पी.एच.डी. नहीं की। वो थोड़ी बाकी है।

● श्री कृष्ण जी ने सत्तर–अस्सी प्रतिशत योग्यता बनाई, दस–बीस प्रतिशत बाकी थी। इसलिए उस जन्म में तो उनकी मुक्ति नहीं हुई। वो योग्यता अगले जन्म में, या और एक दो जन्म के बाद, उन्होंने पूरी कर ली होगी। जब पूरी कर ली तो उसके बाद मोक्ष हो सकता है।

● वीरगति का अर्थ है? वीरगति का अर्थ–अच्छे जन्म की प्राप्ति। अगले जन्म में अच्छा उत्तम फल प्राप्त करना, यह वीरगति है।

जो क्षत्रिय अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अर्थात् न्याय की रक्षा के लिए लड़ते हुये युद्ध में जाकर के शहीद हो जाता है, फिर चाहे हारे या जीते, उससे कोई मतलब नहीं है। उसने अपना कर्तव्य पूरा किया, वो वीरगति को प्राप्त होगा। उसको आगे अच्छा फल मिलेगा। उसने कर्तव्य का पूरा पालन किया। कोई पाप नहीं किया, बुरा काम नहीं किया, यह तो हमने बिल्कुल स्वीकार किया।

● मोक्ष की योग्यता पूरी हो जाना, यह एक अलग बात है। उसके लिए ब्राह्मण के बाद फिर संन्यासी बनना अनिवार्य है। ब्राह्मणत्व और संन्यास जब तक हम धारण नहीं करते, तब तक मोक्ष नहीं होगा, इससे पहले मोक्ष नहीं होने वाला। यह सब करने का उद्देश्य पाँच क्लेशों का नाश करना है। संन्यासी बनने के बाद समाधि लगाकर के अविद्या आदि पाँच क्लेश पूरे नष्ट होने चाहिएँ। यह योगदर्शनकार महर्षि पतंजलि का कहना है। जब तक पाँच क्लेश पूरे नष्ट नहीं होंगे, किसी का मोक्ष होने वाला नहीं है।

● यूँ तो सारे सम्प्रदाय वाले भाँति में हैं। वो सारे यह समझते है कि हमारा मोक्ष हो जाएगा, लेकिन हो थोड़ी जाएगा।

श्रीकृष्ण ने अच्छे काम किए, कर्तव्य का पालन किया, धर्म की रक्षा की, अन्याय का विरोध किया, तो इनको अगला जन्म बहुत अच्छा मिला, यहाँ तक तो कोई आपत्ति नहीं है। यहाँ तक हमें स्वीकार है। आगे एक–दो जन्म और जोर लगाया होगा और फिर मोक्ष हो गया होगा। इसको मानने में आपत्ति नहीं है।

● श्रीराम जी का भी वही उत्तर है। श्रीराम जी भी क्षत्रिय थे, वो भी ब्राह्मण पूरे नहीं बने। उन्होंने अयोध्या में तीस वर्ष तक राज्य किया और उसके बाद उन्होंने वानप्रस्थ लिया। वानप्रस्थ श्रीराम ने भी

जो क्षत्रिय अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अर्थात् न्याय की रक्षा के लिए लड़ते हुये युद्ध में जाकर के शहीद हो जाता है, फिर चाहे हारे या जीते, उससे कोई मतलब नहीं है। उसने अपना कर्तव्य पूरा किया, वो वीरगति को प्राप्त होगा। उसको आगे अच्छा फल मिलेगा। उसने कर्तव्य का पूरा पालन किया। कोई पाप नहीं किया, बुरा काम नहीं किया, यह तो हमने बिल्कुल स्वीकार किया।

लिया श्री कृष्ण जी ने भी लिया, दोनों ने लिया। वानप्रस्थ श्रीराम ने भी लिया, वानप्रस्थ श्रीकृष्ण जी ने भी लिया, दोनों ने लिया। पर संन्यासी दोनों में से कोई भी नहीं बन पाया।

● **कोई व्यक्ति गृहस्थ में जाकर के भी मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।** पर सबको गृहस्थ के नियमों का पालन करना पड़ेगा।

● प्रश्न में यह तो लिखा है कि राम और कृष्ण गृहस्थ थे। लेकिन यह नहीं लिखा कि वो कैसे गृहस्थ थे। लेकिन यह नहीं लिखा कि वो कैसे गृहस्थ थे। यह नहीं पता लोगों को । आपको पता है, रामचन्द्र जी ने शादी करने के बाद कितने वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन किया? चौदह वर्ष वनवास में रहे, पत्नी साथ में थी। बताइए, कितनी संतान उत्पन्न की? एक भी नहीं।

चौदह वर्ष तक श्रीराम ने गृहस्थ होते हुए, पत्नी साथ रखते हुए भी ब्रह्मचर्य का पालन किया। ऐसे ही श्रीकृष्ण जी ने भी शादी के बाद बारह साल तक तपस्या की, ब्रह्मचर्य की साधना की।

● बात करते हैं कि वो गृहस्थ थे। भई! गृहस्थ थे, तो उनके जैसे गृहस्थ बनो, फिर तो ठीक है। गृहस्थ बनकर भी उन जैसे आचरण करें। **ऐसे गृहस्थ आप बनना चाहें तो स्वागत है, खूब बनो। और उसके बाद फिर देश–धर्म के लिए एक अच्छी बढ़िया संतान उत्पन्न करो।** उस संतान का अच्छी तरह पालन करें, उसको विद्वान बनायें, धार्मिक बनाएं, सदाचारी, ईश्वर भक्त, ईमानदार बनाएं।

● श्रीराम और श्रीकृष्ण दोनों राजा थे, दोनों क्षत्रिय थे। और पूरा जीवन न्याय के लिए लड़ते थे। धर्म की रक्षा की, न्याय की रक्षा की, ऐसे आदर्श गृहस्थ बनना हो तो स्वागत है, खूब बनो।

● **लोग यह तो याद रखते हैं कि राम और कृष्ण गृहस्थी थे, यह भूल जाते हैं कि उन्होंने वानप्रस्थ भी लिया।** आज वानप्रस्थ कोई लेता नहीं? आपको वानप्रस्थ लेना पड़ेगा, तपस्या करनी पड़ेगी, साधना करनी पडेगी, वैराग्य ऊँचा उठाना होगा।

● उसके बाद संन्यास लेना पड़ेगा। और संन्यास के बाद पाँच क्लेश राग–द्वेष नष्ट करने पड़ेंगे। तब जाकर मोक्ष होगा। तो यह कठिन काम है, लंबा कामा है पर असंभव नहीं है। गृहस्थी बनने के बाद भी इस तरह से चलेंगे तो मोक्ष हो सकता है।

● यदि ब्रह्मचर्य से सीधे संन्यासी बनेंगे तो थोड़ा आसान पड़ेगा। गृहस्थी में से होकर जाएंगे तो थोड़ा कठिन पड़ेगा। संभव तो है, पर आज कोई इतना काम करने के लिए तैयार नहीं। ऐसा माहौल भी नहीं, ऐसा राजा भी नहीं, ऐसी प्रजा भी नहीं, ऐसा सहयोग भी नहीं, सारा ही कुछ उल्टा है। तो आज के माहौल में गृहस्थ बनकर मोक्ष प्राप्त करना बहुत कठिन है। फिर भी चलो इस बार जो हुआ, सो हुआ, अगली बार अगले जन्म के लिए तैयारी करो।

● आजकल के लोग तो यह सोचते हैं, कि गृहस्थाश्रम मौज–मस्ती के लिए है। योगाभ्यास (ईश्वर–भक्ति या ध्यान) तो बुढ़ापे में करने की चीज़ है। ऐसा सोचना ग़लत है। और कितने ही लोग तो बुढ़ापे में भी ईश्वर का ध्यान नहीं करते, जीवन का बचा–खुचा समय (बुढ़ापा) भी ताश खेलकर नष्ट कर देते हैं। इसका दण्ड तो उनको भोगना ही पड़ेगा।

शंका–क्रियात्मक–योगाभ्यास नामक पुस्तक में आया है कि बिना 'ईश्वर दर्शन' के 'अज्ञान' का नाश नहीं होगा। योगाभ्यास तथा ज्ञान के बिना ईश्वर–दर्शन संभव नहीं है। लेकिन ईश्वर के ज्ञान के पश्चात् भी कोई सूक्ष्म–अज्ञान आत्मा से लिपटा रहता है। ऐसा क्यों?

– देखिए, एक कहावत आपने सुनी होगी, कि **पैसा पैसे को कमाता है।** अगर आपके पास पाँच–सात लाख रुपये हैं, तो आप आगे बिजनेस करके ज्यादा पैसा कमा सकते हैं। यदि आपके पास पूँजी (कैपिटल) ही नहीं, तो आप निवेश (इन्वेस्टमेंट) कैसे करेंगे? बिजनेस में लाभ (प्रॉफिट) क्या कमायेंगे? नहीं कमा सकते। तो व्यापार में धन कमाने के लिए, पहले इन्वेस्टमेंट करने के लिए कुछ राशि होनी चाहिए। वो राशि आगे नई राशि को कमा सकती है।

इसी प्रकार से कुछ ज्ञान पहले हमारे पास होगा। उस ज्ञान से पुरुषार्थ करके हम ईश्वर का दर्शन कर सकते हैं। अब जब ईश्वर का दर्शन हो जाएगा, तो उससे नया ज्ञान मिलेगा, जो अविद्या आदि क्लेशों को नष्ट करेगा। दोनों एक दूसरे पर आधारित हैं। **पहले ज्ञान, फिर ईश्वर का दर्शन होगा। फिर ईश्वर दर्शन से प्राप्त हुए नये ज्ञान की प्राप्ति से अविद्या आदि का नाश होगा।**

हर एक की योग्यता अलग–अलग है। कोई एक ही जन्म में टाटा–बिरला बन सकता है। किसी को पचास जन्म भी लग जायेंगे। वो अपनी–अपनी योग्यता व पुरुषार्थ की बात है। इसी प्रकार से मोक्ष–प्राप्ति की बात भी समझनी चाहिये। **कोई ऐसा भी हो सकता है, जो इसी जन्म में मोक्ष प्राप्त कर ले। कोई हो सकता है कि– पांच जन्म में मोक्ष प्राप्त कर सके और किसी को पचास जन्म भी लग जायें। वो हर एक ही योग्यता और पुरुषार्थ की अलग–अलग स्थिति पर निर्भर है।**

दर्शनयोग महाविद्यालय
रोजड़वन, गुजरात

thearyasamaj.org

Thus Spoke Swami Dayanand

- My chief aim in writing this book (*Satyarth Prakash*) is to unfold Truth. I have expounded truth as truth and falsehood as falsehood.
- To speak of, write about, and believe in a thing as it is, constitutes truth.
- It is the bounden duty of truthful and learned men to unfold this right nature of truth and falsehood before all men in their writings and speeches and then to leave them free to judge what promotes their welfare and what is prejudicial to their interests, and to embrace what is true and reject what is false.
- He that is prejudiced tries to prove that even his falsehood is truth, while the truth of his religious opponent is falsehood. He cannot, therefore, know what the true religion is.
- Though the human soul possesses the capacity for ascertaining truth, yet through self-interest, obstinacy, blockheadedness, ignorance and the like, it is led to renounce truth and incline towards untruth.
- My aim is to further the advancement and well-being of mankind, to help all men in the ascertainment of what is right, and to enable them to accept truth and reject falsehood.
- Differences among the learned create bad blood among the ignorant masses.
- Whoever tries to do anything with the object of benefitting mankind is opposed by the selfish people and various kinds of obstacles are placed in his way.

Compiled by — Satyapriya, 09868426592

(Sourced from the English translation of 'Satyarth Prakash' by Dr. Chiranjiv Bhardwaj and published as 'The Light of Truth' from D.A.V. Publication Division)

वेदों का एक ही सिद्धान्त सब अन्धविश्वासों को समाप्त करने में पर्याप्त

● खुशहाल चन्द्र आर्य

वैदिक धर्म में सौ नहीं दो सौ नहीं सहस्त्रों सिद्धान्त हैं जो बुद्धि, तर्क व विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरते हैं यानि वेदों के सभी सिद्धांत बुद्धि संगत हैं। अन्य सभी मत, पंथ, सम्प्रदायों के सिद्धान्त केवल चमत्कारों और अन्धविश्वासों पर टिके हुए हैं । वैदिक धर्म परमपिता परमात्मा को सर्वव्यापक यानि सृष्टि के कण–कण में उपस्थित है, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, अजर, अमर व अजन्मा मानता है, जबकि अन्य मत, पंथ व सम्प्रदाय ईश्वर को कोई सातवें आसमान पर, कोई चौथे आसमान पर मानाता है, शैव अपने ईश्वर शिव को कैलाश पर्वत पर मानता है तो वैष्णव अपने ईश्वर विष्णु को क्षीर सागर में एक कमल के फूल पर लेटे हुए मानता है, तो कोई अपने आराध्य देव को बैकुण्ठ में बैठा मानता है। पर ये सब निराधार है, कारण एक स्थान पर बैठकर ईश्वर न तो पूरी सृष्टि को ही देख सकता और न ही सभी जीवों के कार्यों को देखकर उनके किये हुए अच्छे या बुरे कर्मों का फल, अच्छे कर्मों का फल सुख के रूप में तथा बुरे कर्मों का फल दुःख के रूप में) दे सकता। इसलिए पूरी सृष्टि के रचियता परमात्मा कभी भी एक स्थान पर बैठा नहीं रह सकता। उसको सर्वव्यापी, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान मानना ही पड़ेगा जिसे वैदिक धर्म मानता है। ईश्वर का कभी जन्म नहीं हो सकता कारण वह जन्म–मरण के बन्धन से परे है, इसीलिए वह अजन्मा, अजर व अमर कहलता है। जन्म लेने वाला प्राणी कभी भी सर्वव्यापक नहीं हो सकता!

वेद, ईश्वर को सर्वशक्तिमान व न्यायकारी मानता है। वह कठिन से कठिन कार्यों में भी किसी दूसरे का सहारा व सहयोग नहीं लेता, वह स्वयं सब काम करता है। जबकि हमारे ईसाई भाई ईसा मसीहा को गॉड़ (ईश्वर) का इकलौता बेटा मानते हैं और यह भी मानते है कि ईसा गॉड़ से सिफारिश करके ईसा में विश्वास रखने वाले अपने भक्त के सब पापों को धुलाकर उसको पूर्ण सुखी बनाता है चाहे उसके कर्म कितने भी बुरे हों, ऐसे ईश्वर को आप केसे न्यायकारी और सर्वशक्तिमान कह सकते हैं? ऐसे ही हमारे मुस्लिम भाई, मोहम्मद साहब को खुदा (ईश्वर) का पैगम्बर यानि दूत मानते हैं। उनका भी यह मत है जो मोहम्मद साहब को खुश कर लेगा, खुदा भी उसके ऊपर खुश हो जायेगा और उसे जन्नत (स्वर्ग) में भेज देगा। चाहे उसके कर्म कैसे भी घिनौने हों। इसी प्रकार हमारे पौराणिक भाई भी किसी से पीछे नहीं। वे भी यह मानते हैं कि किसी देवता की मारफत चाहे व राम हो, कृष्ण हो, हनुमान हो दुर्गा हो या काली हो किसी की भक्ति करने से ही स्वर्ग मिल सकता है। ईश्वर की सीधी स्तुति, प्रार्थनोपासना करना, कोई नहीं बतलाता। जब ईश्वर अपने किसी काम में भी किसी दूसरे का सहयोग नहीं लेता, वह अपनी न्याय–व्यवस्था से स्वयं ही सब काम करता है तो फिर किसी एकलोते पुत्र, पैगम्बर या किसी देवता को बीच का सहयोगी मानना, यह मनुष्य की अज्ञानता की कहलाई जायेगी।

वेदों का एक प्रमुख सिद्धान्त यह है कि मनुष्य प्रकृति के विरुद्ध कभी कोई काम नहीं कर सकता। जैसे मनुष्य आंखों से देखता है और कानों से सुनता है। यदि कोई यह कहे कि फलां मनुष्य कानों से देखता है और आँखों से सुनता है, यह प्रकृति के विरुद्ध होने से इसे सत्य मत मानो। इन असत्य और असम्भव बातों को, सत्य मानने वाले इन बातों को चमत्कार का रूप दे देते हैं। और कहते हैं कि यह पहुँचा हुआ सन्त या संन्यासी है, यह ऐसे चमत्कार कर सकता है। किसी ने कहा कि एक पहुँचे हुए संन्यासी को मैंने एक ही समय में कलकत्ता, मुम्बई, दिल्ली, मद्रास और अहमदाबाद, पाँच जगह देखा। यह प्राकृतिक नियम के विरुद्ध है, कारण एक व्यक्ति एक ही समय में एक स्थान पर रह सकता है। यदि कोई कहे तो उसे मिथ्या समझें। वर्तमान के सभी मत, पंथ व सम्प्रदाय इन चमत्कारों के आधार पर ही अपने–अपने मतों सबसे अच्छा मानते हैं और एक से एक मनघड़न्त बात जोड़ कर अपने मत की महानता सिद्ध करते हैं। जैसे ईश्वरीय नियम है कि जो जीव जैसा कर्म करेगा उसको वैसा ही फल मिलेगा। परन्तु ईसाई भाई कहते हैं कि आप ईसा की शरण में आ जाओ तो गॉड़ (ईश्वर) आपके सब पाप माफ कर देंगे। यह ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है इसलिए असम्भव है। इसी प्रकार मुस्लिम भाई भी कहता है कि तुम मोहम्मद साहब को खुश कर दो तो खुदा भी तुम्हें मोहम्मद साहब के कहने से जन्नत में भेज देगा चाहे तुमने कितने भी पाप किये हों। यही बात हमारे सनातनी भाई भी कहते हैं कि आप दिन में दो बार मंदिर के दर्शन कर लो, आपको ईश्वर हर काम में सफलता देगा चाहे आप दिन भर कितना भी पाप करते रहो। वैदिक धर्म ही एक ऐसा है जो अच्छे काम का फल अच्छा और बुरे काम का फल बुरा ही ईश्वर देता है, ऐसा मानता है। ईश्वर अपने बनाए नियमों के प्रतिकूल न तो कोई काम करता है और न ही कर सकता है कारण ईश्वर भी अपने नियमों में बन्धा हुआ है। ऐसी सच्ची बात वैदिक धर्म ही कह सकता है, अन्य मतों में इतनी सच्ची बात कहने की ही हिम्मत नहीं। इसलिए हर व्यक्ति को वैदिक धर्म अपनाना चाहिए और ईश्वरीय

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

thearyasamaj.org

आजकल सिरियल में प्रेतात्मा भी दिखाया जा रहा है

● श्री हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक'

यह प्रेतात्मा केवल दो महिलाओं को दिखलाई दे रही थी, इनमें से एक महिला के शरीर में प्रवेश करते हुए और निकलते हुए दिखाया जा रहा था, वह प्रेतात्मा अपनी अधूरी इच्छा की पूर्ति के लिये एक महिला के शरीर में प्रवेश कर गई और उससे वही व्यवहार कराने लगी जो उसकी इच्छा थी, अंत में उस महिला के स्वामी से विच्छेद करा दिया और दूसरे पुरुष अर्थात अपने स्वामी को अपनाने के लिये लाचार कर दिया।

हमारे कहने का तात्पर्य यह है कि इस प्रेतात्मा सम्बन्धी सिरियल से बालकों पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ सकता। यह प्रेतात्मा का विषय जो बिल्कुल असत्य है, उसे दर्शकों को दिखाना उचित नहीं था, न है। बहुत से आजकल के बालक भूतों का सिनेमा देखकर अंधेरे में इस घर से उस घर में नहीं जाना चाहते, उनके मन में भूत का संस्कार आ जाता है।

अतः माता–पिता को चाहिये कि भूत सम्बन्धी सिनेमा उन्हें कभी न दिखलावें और न भूत–प्रेत सम्बन्धी कोई कहानी उन्हें सुनावें। क्षत्रपति शिवाजी, झांसी की रानी की वीरता तथा महात्माओं एवं ऋषि दयानन्द की जीवनी से परिचय करावें, इससे उन बालकों पर बहुत अच्छा संस्कार पड़ता है।

गर्भवती माताओं को भी अच्छे अच्छे सिरियल एवं वीर पुरुषों, महात्माओं तथा राजाओं के ऐतिहासिक विषयों को देखना एवं पढ़ना चाहिये। घर के झगड़े में कभी पड़ना नहीं चाहिए। इससे होता यह है कि गर्भ में पल रहे शिशु पर अच्छे प्रभाव पड़ते हैं! (शराब आदि का नशा बिल्कुल त्याग देना चाहिये)।

भूत कोई डरावनी आकृति का नाम नहीं है! भूत उसे कहते हैं जो होकर न रहे अर्थात् जो गुजर गया, उसे भूतकाल कहते हैं। बीत गये का नाम भूत है, और जो सामने दिख रहा है, उसे वर्तमान कहते हैं और आने वाला है, उस समय को भविष्यत कहते हैं।

जैसे जल और वायु के योग से उत्पन्न बुलबुला, फट जाने से उसमें की वायु, वायु में मिल जाती है– वैसे ही मानव आदि प्राणी जो प्राण के योग से उत्पन्न हुये थे, उनके मर जाने से जिस प्राण से वे स्वांस प्रस्वांस ले रहे थे वह मौलिक प्राण, प्राण में प्रवेश कर जाता है। पुनः वही प्राण जो सूक्ष्म शरीर का एक प्रधान अंग है उस पर जैसा प्राणी कर्मानुसार संस्कार पड़ा रहता है, वह उसी योनी में उसी मौलिक प्राण के माध्यम से गर्भ में जन्म का कार्य कारण बन जाता है। किन्तु मानव जब पाप अधिक अति हिंसक बन जाता है तब उसकी आत्मा के माध्यम से उसी किसी हिंसक योनि में स्वाभाविक रूप से चला जाता है।

जैसे शराबी, शराबी के पास, जुआरी, जुआरी के पास, साधु, साधु के पास, ज्ञानी, ज्ञानी के पास जाना पसन्द करते हैं वैसे ही जैसी जिसकी मनोवृत्ति और संस्कार और जैसा सद्व्यवहार और दुर्व्यवहार किया और कर रहा था, मरने के बाद उसकी आत्मा उसी स्वभाव वाले मानव आदि योनि को प्राप्त होता है। मानव में भी उत्तम, मध्यम और निम्न स्वभाव के व्यक्ति होते हैं, वैसे ही पूर्व संस्कार के अनुसार गर्भ में पल रहे शिशु का स्वभाव भी वैसा ही होता है। इसलिये कहा भी जाता है कि प्रत्येक बालक का एक जन्मगत स्वभाव भी होता है, और कुछ माता–पिता के विचारों का भी प्रभाव पड़ता है। जब बालक कुछ बड़ा होता है तब संगत का भी उसके ऊपर असर होता है। इसलिये सबका सुख–दुःख, शिक्षा–दीक्षा, आचार–विचार और मेधा शक्ति समान नहीं होती। यह जन्म–जन्मान्तर का विषय बड़ा ही विचित्र है। इन सबका निर्णय करना बहुत कठिन होता है।

प्रश्न– ओंझा, गुणी, झाड़–फूंक करने वाले तान्त्रिक साधु लोगों के यहाँ यदि कोई पुरुष अथवा नारी जिनको उन्माद, अथवा जो अजीब हरकत करते हैं, उन्हें तान्त्रिक के यहाँ जब ले जाया जाता है तब वह तान्त्रिक बोलता है कि उसे भूत ने पकड़ लिया है, उसे छुड़ाने में एक मुर्गे की बलि और एक हजार रुपया लगेगा, मैं अमुक देवता को बुलाकर उससे उस भूत को छुड़ा दूँगा। उसे रुपया और मुर्गा दे दिया जाता है। तब वह अग्नि प्रज्जवलित कर, कंकाल की खोपड़ी को मुर्गे के खून को लगा देता है और झाड़ू लेकर उस रोगी को झाड़ने लगता है। सिंदूर लगाता है। कभी–कभी तो न जाने क्या–क्या अग्नि में जलाकर, इतना धुवां फैला देता है कि रोगी विरक्त हो जाता है और कभी शरीर में उसके सूई भी चुभो देता है। इस प्रकार अपना लीला–खेला दिखलाकर वह कहता है कि अब भूत उसके ऊपर से चला गया है, यदि फिर कुछ होगा तो उसे हमारे यहाँ ले आइयेगा।

तात्पर्य यह कि उपरोक्त लेखों से इतना ज्ञान अवश्य होना चाहिये कि भूत–प्रेत जैसा कुछ भी नहीं है। मानव के मरने के पश्चात् तुरन्त उसकी योनी बदल जाती है, वह प्रेतात्मा बनकर इधर–उधर भटकता नहीं है।

प्रश्न– ओंझा, गुणी, झाड़–फूंक करने वाले तान्त्रिक साधु लोगों के यहाँ यदि कोई पुरुष अथवा नारी जिनको उन्माद, अथवा जो अजीब हरकत करते हैं, उन्हें तान्त्रिक के यहाँ जब ले जाया जाता है तब वह तान्त्रिक बोलता है कि उसे भूत ने पकड़ लिया है, उसे छुड़ाने में एक मुर्गे की बलि और एक हजार रुपया लगेगा, मैं अमुक देवता को बुलाकर उससे उस भूत को छुड़ा दूँगा। उसे रुपया और मुर्गा दे दिया जाता है। तब वह अग्नि प्रज्जवलित कर, कंकाल की खोपड़ी को मुर्गे के खून को लगा देता है और झाड़ू लेकर उस रोगी को झाड़ने लगता है। सिंदूर लगाता है। कभी–कभी तो न जाने क्या–क्या अग्नि में जलाकर, इतना धुवां फैला देता है कि रोगी विरक्त हो जाता है और कभी शरीर में उसके सूई भी चुभो देता है। इस प्रकार अपना लीला–खेला दिखलाकर वह कहता है कि अब भूत उसके ऊपर से चला गया है, यदि फिर कुछ होगा तो उसे हमारे यहाँ ले आइयेगा।

असल में यह उन्माद और जैसे–तैसे बोलने की जो क्रिया है, ये सब एक प्रकार की मानसिक बीमारी है, नींद न लगना, कुछ को कुछ समझ बैठना, एक ही चिन्ता में बार–बार डूबे रहना, ऐसे अनेक प्रकार के रोग होते हैं जो बहुत से अविद्या के कारण उत्पन्न हो जाते हैं, जब कोई उन्हें गुरु उनकी सोच उनके भ्रम को दूर कर देता है तब उन्हें जो प्रत्यक्ष, सत्य और विद्या है जान लेने से उनके अनेक मानसिक धारण ााओं के समाधान हो जाने से वे शान्ति बोध करने लगते हैं। इस मानसिक सम्बन्धी रोग में वेद मंत्रों से सामान्य हवन, देव यज्ञ सामग्रियों से अवश्य करना और कराना चाहिये।

और जैसे तैसे बोलने की क्रिया तथा पागल में मनोवैज्ञानिक डाक्टरों को भी दिखाना चाहिये। यदि नींद न लगे तो उसकी गोली अवश्य लें, सोते समय अपने सर्वांगों का ढीला करते रहें तनाव न हो और अपने मन ध्यान को पैरों की तरफ लगावे, मन में ईश्वर का चिन्तन करते रहे फिर न जाने कब निद्रा अपनी गोद में सुला लेगी।

जो तान्त्रिक के भरोसे रहता है, उस रोगी की मृत्यु हो सकती है, इसलिये अच्छे डाक्टर से चिकित्सा करना सबसे उत्तम है। सन्निपात आदि ज्वरादि में बहुत से रोगी बड़बड़ाने लगते हैं और बहुत से स्त्रियों को जो गर्भवती नहीं हुई है उनमें– किसी किसी को हिस्ट्रीया की बिमारी हो जाती है। उस समय वह ज्ञानहारा हो जाती है, कुछ का कुछ बोलने लगती है। इसी प्रकार की एक घटना हमारे पड़ोस में एक नव विवाहिता को हो गई, रात को जैसे–तैसे बोलने लगी, वे लोग ओझा को बुलाये और वह आकर उस का बाल पकड़कर उससे पूछने लगा कि तुम कहाँ से आई हो, उसने कहा– नीम के पेड़ से, अंत में वह ओझा, झाड़–फूंककर चला गया। वहाँ मैं भी उपस्थित था, मैंने उन लोगों से कहा कि इसे हिस्ट्रीया की बीमारी है, जब तक वह गर्भवती नहीं होगी तब तक वह कभी–कभी ऐसे ही हरकत करती रहेगी। प्रातः डाक्टर आये और औषधि दे गये, उसने भी वही बात कही जो मैंने कहा था।

एक 14 वर्ष का पारस नाम का आर्यसमाजी था, वह ग्राम में रहता था। उस ग्राम के सभी लोग जानते थे कि पारस भूत–प्रेत को नहीं मानता, उसके साथियों ने कहा कि अगर तुम भूत को नहीं मानते तो क्या उस जंगल के पार बरगद के पेड़ के सामने रात 12 बजे वहाँ जाकर एक कील जमीन में गाड़कर आ सकते हो? फिर क्या था जिस दिन कहा गया था, उसी दिन रात को 12 बजे, कील और हथौड़ी लेकर जाने लगा। दोनों तरफ के जंगल में कुछ व्यक्ति उसे डराने के लिए भयानक शब्द बोलने लगे, वह थोड़ी चिन्ता में पड़ गया, मन में भय का संस्कार उत्पन्न होने लगा। उसने धोती पहन रखी थी। जल्दी जल्दी में वहाँ कील ठोककर ज्योंही वहां से चला कि उसे लगा कि धोती को कोई पकड़ लिया। बस वह भयभीत होकर वहाँ से भागा और घर आकर बीमार पड़ गया। उसके पिता जी चिन्ता में पड़ गये। अंत में एक दिन बाद, उस पारस के गुरु जी को बुलाया गया। उन्होंने सब घटना को सुनकर जहाँ कील ठोकी थी वहाँ जाकर देखा कि धोती का किनारा भी जल्दबाजी में ठोक दिया था। गुरुजी ने उस धोती के टुकड़े को ले आकर उस पारस से कहने लगे कि भूत–प्रेत कुछ नहीं था तुमने तुरंत कील को गाड़ते समय, तुम्हारी धोती भी कील में अटक गई थी, देखो यह धोती का टुकड़ा उसका प्रमाण है, और जाते समय जो भयानक आवाज होती था वह कुछ गांव वालों की बदमाशी थी, ताकि तुम वहां न जा सको। पारस की शंका का समाधान जब गुरुजी ने कर दिया, तब धीरे धीरे पारस का ज्वरादि सब ठीक होने लगा।

मु.पो. मुरारई, जि. वीरभूम,
(प. बंगाल)731219
मो. 8158078011

thearyasamaj.org

हम कब तक झूठ प्रचारित करते रहेंगे

● हरिकृष्ण निगम

नई दिल्ली से प्रकाशित एक प्रतिष्ठित साप्ताहिक 'इन्डिया टुडे' ने कुछ दिनों पहले अपने एक अंक में दिवंगत हुए पुराने कांग्रेसी नेता और मुस्लिम विचारक डा. रफ़ीक जकरिया को उद्धृत करते हुए मोटे अक्षरों में लिखा कि इतिहास में कोई ऐसा साक्ष्य नहीं हैं कि जो सिद्ध कर सके कि किसी मुस्लिम ने कोई हिन्दू मन्दिर तोड़ा हो। यही बात इतिहासकार डा. इरफान हबीब और रोमिला थापर भी दूसरे सन्दर्भ में कह चुके हैं। यह भी कहा गया है कि मुस्लिम आक्रमणकारी सिर्फ धन सम्पत्ति की लूट के उद्देश्य से आक्रान्ता के रूप में भारत आते रहे और बस यही उनका मन्तव्य था।

भारत के पिछले एक हज़ार साल के इतिहास को झुठलाते हुए हर छोटे बड़े शहरों के सैकड़ों पुराने भग्नावशेषों को नकारते हुए जिसमें मुस्लिम आक्रमणों के बर्बर ध्वंस की निशानियाँ आज भी मौजूद हैं। इस तरह की दुष्प्रचारित की जा रही राजनीतिक टिप्पणियाँ हमें अनायास आहत कर आक्रोश से भर सकती हैं। कभी कभी लगता है कि हम स्वयं अंशतः इस बात के गुनहगार हैं कि अपनी तटस्थता की आड़ में हम ऐसी टिप्पणियों का प्रतिरोध नहीं करते हैं। मेरे विचार में राजनीति प्रेरित दिग्भ्रमित करने वाले ऐसे लेखक इतिहास व पुरातत्व के अनुशासन से गिरकर सिर्फ असत्य के अलावा कुछ नहीं बोल सकते हैं।

कहते हैं कि झूठ की अनेक किस्में होती हैं। बुरा झूठ, सफेद झूठ, आंकड़ों का झूठ, राजनीतिक झूठ आदि, आदि! पर यदि अपने चारों ओर गौर से देखें तो पाएंगे कि एक चौथे प्रकार का झूठ भी होता हैं जिसकी प्रकृति उपर्युक्त प्रकार के झूठ से कई गुना भयानक होती हैं। इसे हम 'गजब का झूठ' कह सकते हैं जो बहुधा हमारे देश के सेकुलरवादी बोलते हैं। जहाँ तक देश के इतिहास का सन्दर्भ है, झूठ बोलना उनकी फ़ितरत में दाखिल है, लगता है नस–नस में बस गया है।

मुस्लिम शासकों के स्वयं अपने इतिहासकार व वृत्तान्त लेखक, मध्य युग में भारत भ्रमण के लिए आए विदेशी यात्री व स्वयं ब्रिटिश इतिहासकार सभी ने सदियों तक हिन्दू मन्दिरों के ध्वंस के बारे में जो लिखा है उसके बाद भी विकृत सोच द्वारा जो दुष्प्रचार हमारी पत्र पत्रिकाओं द्वारा फैलाया जा रहा हैं वह अक्षम्य हैं। पुराने इतिवृत्त जैसे आज का पूर्वी अफगानिस्तान शैव पंथी था, उत्तरी पूर्वी सीमान्त से लगे अनेक देश अथवा जहाँ हमारे मूल देश की सभ्यता की उपशाखायें विद्यमान थीं उनको कैसे नेस्तनाबूद किया गया– यह भुला भी दिया जाए, पर आज भी देश के दूर दराज के हर कोने में आप जाकर भग्न मन्दिर या खण्डित मूर्तियाँ देख सकते हैं। मात्र एक छोटा उदाहरण है, चाहे आप जबलपुर के चौसठ योगिनी मन्दिर जाएं या भोजपुर का शिव मन्दिर अथवा हाम्पी आपका हृदयविदीर्ण हुए बिना नही रह सकता। सोमनाथ, मथुरा, काशी या अयोध्या की बात ही क्या कहना जिनका विनाश इस्लाम के विस्तार के लिए मनोवैज्ञानिक रूप से कितना अपरिहार्य था। आज के पलायनवादी, 'तटस्थ' शिक्षित हिन्दू की संवेदनशीलता मरती जा रही है और इसलिए वह इसे समझ नहीं सकता है।

क्या इसे आप इसे घृणित मार्क्सवादी व्याख्या नहीं कहेंगे–जिसे बार–बार हमारे अंग्रेज़ी अखबार प्रचारित करने से नहीं चूकते हैं कि इस्लामी आक्रमणकारियों ने हिन्दुओं ने मन्दिरों में अपार स्वर्णराशि व सम्पत्ति इकठ्ठा कर ने एक अपराध किया था, जिससे आक्रमणकारियों का उनका आकर्षित होना स्वाभाविक था। पर उसका यह फायदा भी हुआ कि उन्होंने भारतीय समाज में एक क्रान्ति जैसी लाई थी जो एकात्मवादी को बढ़ावा देने के साथ जाति व्यवस्था के विरूद्ध भी जनमत तैयार कर सकी। कुतर्क की भी सीमा होती हैं। अत्यन्त संक्षेप में सन ६३२ में भारत में इस्लाम के आगमन के बाद से किस तरह हज़ारों मन्दिरों का ध्वंस हुआ इसको आज के मीडिया को साक्ष्यों से परिचित कराना जरूरी है जिससे वे हमारे ही देश में बहुसंख्यकों को बरगला न सकें। फ्रेंच इतिहासकार एलेन डेनिल ने लिखा हैं कि प्रारम्भ से ही इस्लाम का इतिहास भारत के लिए विनाश, रक्तपात, लूट और मन्दिरों के विध्वंस के लिए भूकम्प की तरह सिद्ध हुआ था। सन् १०१८ से लेकर सन् १०२४ तक मथुरा, कन्नौज, कालिंजर और बनारस के साथ सोमनाथ के मन्दिर क्रूरता से नष्ट किए गए। प्रसिद्ध पत्रकार एम. वी. कामथ ने कुछ दिनों पहले 19वीं शताब्दी के एक ब्रिटिश यात्री को उद्धृत करते हुए लिखा कि सूरत से दिल्ली तक के बीच उसने एक भी हिन्दू मन्दिर नहीं देखा क्योंकि वे सब नष्ट किए जा चुके थे। इस्लामी इतिहासकारों ने सैकड़ों साल पहले गर्व से लिखा है कि सल्तनत और मुगल शासकों के समय सरकार का "मन्दिर तोड़ने का विभाग" कितनी कुशलता व दक्षता से यह काम करता था। सोमनाथ पहली बार महमूद गजनवी द्वारा १०२४ में लूटा गया और शिवलिंग तोड़ डाला गया। सन् १२९८ में अलाउद्दीन खिलजी के समय में इस विशाल देवालय को नष्ट किया गया। मुस्लिम इतिहासकारों के अनुसार सोमनाथ के शिवलिंग के टुकड़े गजबी की जुम्मा मस्जिद की सीढ़ियों में जोड़े गए जिससे इस्लाम के अनुयायी पैरों से रौंदे। तारीखे फीरोजशाही के इतिहासकार के अनुसार सुल्तान अल्तुतमश (१२१० – १२३६) ने अपने मारवाड़ के आक्रमण के दौरान अनेक महत्वपूर्ण मन्दिरों की मूर्तियों को लाकर दिल्ली की जामा मस्जिद में सीढ़ियों पर चुनवाया था। इसी तरह जलालुद्दीन खिलजी (१२१९–१२९६) ने रणथम्भौर के आक्रमण के बाद मूर्तियों को दिल्ली लाकर इसी तरह मूर्तियों को सीढ़ियों पर चुनवाने का धार्मिक कार्य करता था। बाद दर्जनों शासकों ने आगे आनी वाली सदियों तक यह चाहे दिल्ली में हो या बह्मनी, मालवा, बरार, या दक्खिन के राज्य हो यही दोहराया। इन अभिलेखित साक्ष्यों के बाद भी यदि को ई कथित इतिहासकार उलटी सोच दिखलाए और हमारे प्रतिष्ठित कहलाने वाली पत्रिकाएं या समाचार पत्र उनके लिए अपने कालम खोल दें तब ऐसे आचरण के लिए शब्द ढूंढना ही मुश्किल होगा। हमारे देश में अपने अतीत के प्रति अधिकांश शिक्षित वर्ग इतना उदासीन हैं कि विद्पीकरण के साथ साथ घोर सत ही और असत्य वक्तव्य भी बिना किसी प्रतिरोध के छापे जा सकते हैं। कदाचित्त इसीलिए नोबेल विजेता वी. एस. नयपाल ने कुछ दिनों पहले एक साक्षात्कार में रोमिला थापर को 'फ्राड' तक कह डाला था।

आज हिन्दू हीनताग्रंथिवश, अपनी सभ्यता की प्रमुखता को भी अभिव्यक्त करने की स्थिति में नहीं हैं और कदाचित् इतिहास की बाध्यताओं व उसके सही अनुशासन को नहीं समझ पाते हैं। उनके मन में कुट कूट कर भर दिया गया है कि उनका अपना अतीत, आज की नजरों में, साम्प्रदायिक इतिहास है। यह विषय इतना विस्तृत तथा बहुमुखी है कि इसके बारे में कुछ शब्दों में विश्लेषण नहीं किया जा सकता हाँ, असत्य के प्रचार करने वालों की भर्त्सना अवश्य की जा सकती है।

ए–१००२, पंचशील हाईट्स
महावीर नगर, कान्दिवली – (प)
मुम्बई– ४०००६७
दूरभाष: 9820215464

☞ पृष्ठ 04 का शेष

शिष्ट पंक्ति के व्यक्तित्व...

फैली कुरीतियों के लिए भी सतत प्रयास किया। वे डी.ए.वी स्कूल, कॉलेजों के संचालन के साथ–२ स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ शुद्धि आन्दोलन का कार्य करते रहे। अनेकानेक कार्य करते हुए कार्यों में इतना तल्लीन हो गये कि स्वास्थ्य बिगड़ गया।

१४ नवम्बर १९३८ की अर्धरात्री के पश्चात् वे हमसे दूर हो गये। आज महात्मा जी संसार में नहीं है, पुनरपि उनके कार्य उन्हें जीवन्त बनाये हुए हैं। उनकी सच्ची श्रद्धांजलि इसी में निहित है कि डी.ए.वी स्कूल, कॉलेज आदि प्रकल्पों में विस्तृत डी.ए.वी संस्थान आन्दोलन महात्मा हंसराज जी के उद्देश्यों एवं वेद, आर्यसमाज, आर्य विचार प्रसार के कार्य को कहीं से स्खलित न होने द, यदि कहीं स्खलन हो, तो उसे भी सम्भालते हुए महापुरूष की कर्मशाला को सशस्त बनावें।

डी.ए.वी नाम में डी. दयानन्द वाचक शब्द है जो कि वेद, संस्कृति, धर्म का पर्यायवाची है। तात्पर्य यह हुआ डी.ए.वी कॉलेज, स्कूल आदि दयानन्द मिशन को अग्रगण्य बनाने में सर्वदा प्रयत्नशील रहें। महात्मा जी आज भी डी.ए.वी संस्थानों को निहार रहे हैं।

**आत्मार्थं जीवलोकऽस्मिन्को न जीवति मानवः।
परं परोपकारार्थं यो जीवति स जीवति।।**

**प्राचार्या–पाणिनि कन्या महाविद्यालय,
वाराणसी–10
आर्य कन्या गुरुकुल
शिवगंज, जि. सिरोही–३०७०२७ (राज.)**

thearyasamaj.org

स्वामी दयानन्द सरस्वती के उद्देश्य क्या थे?

● भूमण्डल वेद प्रचारक मेहता जैमिनी

भूमण्डल प्रचारक मेहता जैमिनी (1871–1957) आर्य समाज की अपने समय की महान विभूति थे। उन्होंने देश से बाहर संसार के अनेक देशों में वैदिक धर्म का प्रचार कर एक कीर्तिमान बनाया है।

हमने प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु लिखित मेहता जैमिनी जी की विस्तृत जीवनी पढ़ी है एवं फोन पर वार्तालाप भी किया है। वह बताते हैं कि मेहता जैमिनी ने किसी सभी संस्था से धन की सहायता प्राप्त किये बिना ही स्वयं के प्रयासों से जो कार्य किया व लगभग 90 ग्रंथों का प्रणयन किया, वह एक कीर्तिमान है। यहां हम मेहता जैमिनी की कलम से लिखित "जगद् गुरु दयानन्द का संसार पर जादू" पुस्तक में से अन्त में प्रकाशित इस बहुमूल्य लेख प्रस्तुत कर रहे हैं।

स्वामीजी को भिन्न 2 लोगों ने भिन्न 2 प्रकार से समझा है, इसलिये हम यहां संक्षिप्तरूप से स्वामी जी के उद्देश्यों का वर्णन करते हैं।

1–संसार को मनुष्य पूजा, अवतार पूजा, पाषाण पूजा, कबर, मढ़ी, मसान, प्रतिमा, पशु और वृक्ष इन सब प्रकार की मिथ्या पूजा तथा भ्रमजाल से छुड़ा कर केवल परमात्मा की पूजा तथा ईश्वर भक्ति का उपदेश किया। उन्होंने देखा कि तमाम मतमतान्तरों के लोग मरदुम परस्ती के गढ़े में गिर पड़े हैं इसलिये वैदिक धर्म में तथा आर्य समाज के नियमों उपनियमों और अपने रचित ग्रन्थों में अपने नाम को कहीं जगह नहीं दी, न अपने मन्तव्यों में कहीं दयानन्द के शब्द को कोई स्थान दिया। वह संसार में एक ही वेदमत चलाना चाहते थे जो पीर, पैगम्बर, मोक्ष–दाता पुरुषों की शख्सीयत से पाक है।

2–**देशभक्ति का दूसरा उद्देश्य** था, चुनांचे ब्रह्म समाज पर समालोचना करते हुए वह सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं:

परन्तु इन लोगों में (ब्रह्म समाजियों से मुराद है) स्वदेश भक्ति बहुत कम है। अपने देश की प्रशंसा तथा पूर्वजों की बड़ाई तो दूर रही, ब्रह्मा आदि ऋषियों का नाम तक भी नहीं लेते। भला जो आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न हुए हैं और जिन्होंने इस देश का पानी पिया है, अपने पूर्वजों के मार्ग को छोड़ कर अन्य देशीय सभ्यता पर मुग्ध हो जाना उन सज्जन तथा धर्मात्मा पुरुषों का काम नहीं। देखो अपने देश के बनाये हुए जूतों को अंग्रेज लोग दफ्तर में ले जाने देते हैं, परन्तु इस देश के जूतों को नहीं। गोया हमारे देश के मनुष्यों से अधिक अपने जूते का मान करते हैं। देखो 100 वर्ष से (लेखक के समय) अधिक हुए कि इस देश में यूरूपियन लोग आये और आज तक ये लोग मोटा कपड़ा पहनते हैं जैसा कि अपने देश में पहनते थे। इन्होंने अपने देश का चाल चलन नहीं छोड़ा और तुम में से बहुत से लोगों ने उसका अनुकरण कर लिया है। तुम मन्द बुद्धि और वह बुद्धिमान् प्रतीत होते हैं। अन्धा अनुकरण करना बुद्धिमानों का काम नहीं।

आपको उचित है कि जिस देश की वस्तु से अपना शरीर बना और अब भी परवरिश पा रहा है और आयन्दा पावेगा उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब लोग चिन्ता तथा प्रेम से करें।

3–आर्य्यावर्त्त तथा मातृभूमि से प्रेम – यह आर्य्यावर्त्त ऐसा देश है कि जिस के समान पृथिवी पर अन्य कोई देश नहीं है इसलिये देश का नाम स्वर्णभूमि है क्योंकि स्वर्ण, रत्न, हीरे, जवाहरात आदि यहीं उत्पन्न होते हैं, इस लिये अन्य देशों के निवासी लोग इसकी प्रशंसा करते हैं और आशा रखते हैं कि पारस पत्थर जो सुना जाता है, यह बात तो झूठी है परन्तु आर्य्यावर्त्त देश ही सच्चा पारस पत्थर है कि जिसको लोहे के समान अन्य देश के कंगाल लोग स्पर्श करते ही स्वर्ण के समान धनपति बन जाते हैं।

यह निश्चित है कि जितनी विद्यायें तथा धर्म पृथिवी पर फैले है, वे सब आर्य्यावर्त्त से ही फैले हैं। जो राजनीति भूमण्डल पर प्रचलित है या होगी वह सब संस्कृत विद्या से ली गई है। वेद संस्कृत भाषा में प्रकट हुए जो किसी देश की भाषा नहीं। और वेदों की भाषा ही तमाम भाषाओं की मूल स्रोत है।

महर्षि दयानन्द का उद्देश्य संसार का तथा मनुष्य मात्र का उपकार करना तथा शारीरिक, सामाजिक और आध्यात्मिक उन्नति ही में वह मनुष्य मात्र की भलाई समझते थे।

मिलाप करना था, भेदभाव हटा कर सबको एक मत पर लाना चाहते थे।

तमाम देशों में स्वतंत्रता तथा स्वराज्य की स्थापना हो, वह केवल भारतवर्ष को ही स्वराज्य दिलाना नहीं चाहते थे, परन्तु प्रत्येक देश में चाहते थे कि प्रजातान्त्रिक राज्य की स्थापना हो, भारत के सम्बन्ध में वह लिखते हैं कि–

अन्य देशों में राज्य करना तो अलग रहा अपने देश में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतंत्र स्वाधीन और निर्भय राज्य नहीं है, जो कुछ है, वह भी विदेशियों से पदाक्रान्त हो रहा है।

सत्यार्थ प्रकाश पंक्ति 237

"मनुष्यों को चाहिये कि पुरुषार्थ करके पराधीनता से छूटकर स्वतंत्रता को प्राप्त करें।"

आयुर्वेद भाष्य पृष्ठ 514

हे महाराजाधिराज पार–ब्रह्म परमेश्वर हम लोगों को यथावत् पुष्ट करें, अन्य देशीय राजे अर्थात् शासक हमारे देश में कभी न हो तथा हम लोग पराधीन कभी न हों।

आर्य्याभिविनव पृष्ठ 108

इस जगत् में किसी मनुष्य को विद्या के प्रकाश का अभ्यास, अपनी स्वतंत्रता और हर प्रकार से अपने कार्यों की उन्नति को न छोड़ना चाहिये।

यजुर्वेद 15/5

(7)वह चाहते थे कि संसार में समस्त भूमण्डल पर ऐसा राज्य हो जो सब जातियों से बलपूर्वक (जबरदस्ती) कानून मनवावे। उनका कथन है कि संसार में शान्ति चक्रवर्ती राज्य में हो सकती है, जिसके पास जल, थल, तथा वायु में युद्ध करने वाली सेना अधिक हो, जिसकी ध्वजा संसार भर में लहरावे। चुनांचे H.C. Wells ने भी अपनी पुस्तक Salvaging of civilization में वर्तमान league of Nations के विरुद्ध लिखा है कि "A league from which large sections of the wolrd are excluded is no contribution to that need. It may be worse than nothing. If man is to be saved from destruction, the must be a world control such a World Government that should have navy to supersede there British, artillery to surpass the French and Air Force superseding all other airforces. For many flags there must be one sovereign flag.

अर्थ– यदि मनुष्य को तबाही से बचना है तो सार्वभौमिक अध्यक्षता होनी चाहिये। जिसके पास जलमार्गी इतनी सेना हो जो बरतानिया से अधिक हो, तोपखाना फ्रांस के राज्य से अधिक हो, और वायु सेना तमाम देशों के वायुयानों की शक्ति से अधिक हों। अधिक ध्वजाओं के स्थान में एक चक्रवर्ती ध्वजा हो।

(8)अछूतों, अन्त्यजों तथा अन्य जातियों को उठाना तथा उनके साथ समानता का व्यवहार, जाति के अभिमान को तोड़कर मनुष्यमात्र से प्रेम मैत्रीभाव का बर्त्ताव करना।

(9)प्राचीन सभ्यता को पुनः जीवितः कर उसको गौरव जनता पर प्रकट किया तथा हिन्द को भारत तथा ऋषि भूमि बना दिया।

(10) **भारत के लिये एक लिपि तथा देवनागरी का प्रचार किया, इसलिये तमाम ग्रन्थ हिन्दी भाषा में प्रकाशित किये। उनका विचार था कि भारत तब तक संगठित नहीं हो सकता जब तक कि इसके सभी नागरिक एक भाषा बोलने तथा लिखने वाले न हों।**

(11) वेदों के ऊपर से पश्चिमी विद्वानों के लगाये हुए मिथ्या लांछनों तथा दोषों को दूर किया। वेद को विज्ञान तथा तत्त्वज्ञान की बुद्धि पूर्वक की गई रचना वा पुस्तक सिद्ध किया। अन्य तमाम मत मतान्तरों की अपेक्षा वेद की उच्च कोटि की पुस्तक, ईश्वरीय ज्ञान के भण्डार तथ हर प्रकार से शुद्ध व पवित्र सिद्ध कर दिया।

(12) शुद्धि का दरवाजा खोल दिया और बताया कि वेद के स्वाध्याय का अधिकार मनुष्य मात्र को है, इसलिये प्रत्येक मनुष्य जो वेद को माने, वह आर्य धर्म में प्रवेश कर सकता है। गोया हिन्दू धर्म को प्रति सुकड़ता जा रहा था, उसको सागर के समान विशाल कर दिया। हिन्दू जाति जो प्रतिदिन मुसलमानों तथा ईसाईयों का निवाला बन रही थीं, अब होश में आ गई है और वह बिछड़े हुए भाइयों को गले लगाकर अपने भीतर मिला रही है।

(13) स्वामीजी का उद्देश्य था कि भारत में पुनः ब्रह्मचर्य की प्रथा चले, इसलिये इन्होंने वर्तमान शिक्षा प्रणाली के विरुद्ध आवाज् उठाई। उसका परिणाम यह हुआ कि भारत में बड़ी संख्या में गुरुकुल स्थापित हो गये और प्रतिदिन उनकी संख्या अधिक हो रही है। आज संसार के बड़े बड़े विद्वान तथा अन्य मत मतान्तरों के नेता भी ऋषि शिक्षा प्रणाली का अनुकरण कर रहे हैं।

(14) भारत के अनाथों की रक्षा की जाये। वह चाहते थे कि प्रत्येक नगर में अनाथालय हों ताकि ऋषि सन्तान भूख के मारे अन्य मतावलम्बी न हो जाये या मृत्यु के घाट ने उतरे। आज उसी ऋषि की कृपा से अनेक अनाथालय, आर्यसमाज, हिन्दू सभायें, सनातनी भाइयों की ओर से भी स्थापित हो रही हैं। जहां भारतीय अनाथों को धार्मिक, शिल्प तथा अंग्रेजी की शिक्षा देकर योग्य बनाया जा रहा है।

(15) स्त्री जाति जिसे शूद्र समझा जाता था, उसका सम्मान बढ़ाकर उसे

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

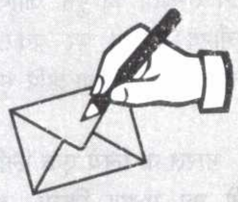

पत्र/कविता

डॉ. निरुपण जी का सिद्धान्त विरुद्ध निरुपण

'परोपकारी' के दिसम्बर (द्वितीय) 2014 के अंक में **डॉ निरुपण जी विद्यालंकार** का लेख महर्षि दयानन्द और सृष्टिसंवत् प्रकाशित हुआ है। इस लेख के अन्तिम भाग में लेखक ने अपने लेख के मूल विषय से हटकर जीव और ब्रह्म के स्वरूप के बारे में चर्चा की है। इस चर्चा में लेखक ने वैदिक सिद्धान्त विरुद्ध बात लिखी है।

उन्होंने 'अध्यात्म रामायण' नामक अनार्ष ग्रन्थ का उद्धरण देकर लिखा है कि–

''जीव ब्रह्म सूक्ष्म होने से स्थूल नेत्रों से दृष्टिगोचर नहीं होते, प्रत्युत योगाभ्यास द्वारा वे दिखाई देते हैं। अतः जीव, ब्रह्मादि निराकार वस्तुओं को सर्वथा अरूप कहना नितान्त असंगत है। योगियों को योग बल द्वारा जीवात्मा तथा परमात्मा का जो समाधिजन्य प्रत्यक्ष होता है, वह सूक्ष्मतम रूप वाली होनी चाहिए।''

डॉ. निरुपण जी का उक्त मत वेद–विरुद्ध है। क्योंकि वेदादि शास्त्रों में सर्वत्र इन दोनों चेतन, निराकार तत्त्वों को अरूप, अदृश्य ही प्रतिपादित किया गया है। रूप (या दृश्यमान होना) केवल प्रकृति का गुण है, जीव और ब्रह्म का नहीं। सूक्ष्म मूल–प्रकृति सृष्टि का उपादान कारण है। उसमें से निर्मित सभी कार्य पदार्थों में रूप गुण विद्यमान रहता है–चाहे सूक्ष्म रूप हो या स्थूल रूप हो। मगर जीव और ब्रह्म मूल–प्रकृति के कार्य पदार्थ नहीं हैं। ये दोनों अनादि, अनुत्पन्न चेतन पदार्थ हैं। ये दोनों सर्वथा अप्राकृतिक, अभौतिक सत्ताएं हैं। उन दोनों में रूप गुण का सर्वथा अभाव ही होता है। अतः कोई भी व्यक्ति, चाहे वह सामान्य हो या विशेष योग्यता प्राप्त महान योगी–इन दोनों पदार्थों को कभी भी नहीं देख सकता।

समाधि तभी प्राप्त हो सकती है, जब व्यक्ति को इन तीनों अनादि सत्ताओं के स्वरूप का वास्तविक ज्ञान हो। समाधि अवस्था में साधक को जब आत्मा और परमात्मा का साक्षात्कार होता है, तब भी ये दोनों पदार्थ–जीव और ब्रह्म सर्वथा अरूप ही होते हैं और समाधि अवस्था में भी योगी को इसी सत्य का साक्षात्कार–दर्शन (Realization) होता है कि जीव और ब्रह्म वास्तव में अरूप हैं। समाधि ज्ञान की सर्वोत्तम अवस्था होती है, उसमें मिथ्या ज्ञान या भ्रान्ति के लिए कोई भी अवकाश नहीं होता।

समाधि अवस्था में आत्म–दर्शन या ईश्वर–साक्षात्कार का अर्थ किसी रूप को देखना नहीं है। साधक इन पदार्थों के जिन यथार्थ गुण–कर्म–स्वभाव को निश्चयात्मक मानकर अभी तक साधना कर रहा था, उसी अनुमान तथा शब्द प्रमाण आधारित ज्ञान की वह समाधि अवस्था में सीधी अनुभूति या प्रत्यक्ष करता है; और ईश्वर का सांनिध्य पाकर उसे अलौकिक आनन्द आदि गुणों की प्राप्ति होती है।

आत्मा और परमात्मा सर्वथा रूप रहित हैं। अतः उनमें किसी भी प्रकार के रूप की कल्पना करना मिथ्या ज्ञान है। मिथ्या ज्ञान समाधि में बाधक है। अतः जीव, ब्रह्मादि निराकार वस्तुओं को सर्वथा अरूप कहना ही सत्य है।

8–17 टाउनशिप,
पो .नर्मदानगर, भरुच,
गुजरात–392015

****

सफल जग में वेदों का प्रचार होगा

जिसे वेद के धर्म से प्यार होगा,
सुखी उसके जीवन का संसार होगा।
चढ़ेगा प्रभु शक्ति का रंग ऐसा,
यह जग सारा अपना ही परिवार होगा।।
न होगा कोई करनी कथनी में अन्तर,
बहुत सरल जीवन का व्यवहार होगा।
बुराई के फन्दों से मुक्ति मिलेगी,
खरी भावनाओं का सत्कार होगा।।
हवन यज्ञ है ऐसा कल्याणकारी,
सुगन्धी से भरपूर घरबार होगा।
दयानन्द ने पाठ ऐसा पढ़ाया,
सफल जग में वेदों का प्रचार होगा।।
सचाई का होता है वहां बोलबाला,
जहां काम सब धर्मानुसार होगा।
मिलेगा जिसे साथ अन्तःकरण का,
वह अपने इरादों का सरदार होगा।।
न मनमानियां कर सकेगा आडम्बर,
न पाखण्ड का गर्म बाजार होगा।
लगे प्यारी जीवन को निष्काम सेवा,
न जीवन में छल कपट अंकार होगा।।
दिलों के इरादों में हलचल मचेगी,
विचारों की शक्ति का विस्तार होगा।
रहे लक्ष्य जीवन का जीवन से प्यारा,
सुखद स्वस्ति पथ ऐसा तैयार होगा।।
रहे गा न अज्ञानता का अन्धेरा,
यह जीवन उजालों का भण्डार होगा।
इधर अपने कर्मों की होगी कमाई,
उधर न्यायकारी का दरबार होगा।।

वेद प्रकाश शर्मा धारीवाल
103 अंकुर–बी, हालर
बलसाड–396001, गुजरात

वेदों में ही ईश्वर का कथन है

संसार की प्राचीनत्तम पुस्तक ऋग्वेद का उद्घोष है– **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'**। वेदों में ही ईश्वर का कथन है– **'अहम् भूमिमददामार्याय'**। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में अर्जुन के मोह को **'अनार्यजुष्टम्'** कहा है। बौद्ध धर्म के सिद्धान्त को 'चार आर्य सत्य' के नाम से जाना जाता है। रामायण एवं महाभारत में सर्वत्र ही आर्य शब्द का ही प्रयोग हुआ है। हमारे पढ़े जाने वाले संकल्प मंत्र में भी **'जम्बूद्वीपे आर्यावर्त्ते भरतखण्डे'** कहा गया है। यहाँ तक कि लोक भाषा में भी आर्य शब्द का अपभ्रंश 'आरज' शब्द का प्रयोग हुआ है। मुगलकाल (अकबर काल) में रचित तुलसीदास की 'रामचरित मानस' में आर्य का अपभ्रंश 'आरज' शब्द आया है– **'आरत' बस सम्मुख भजऊ बिलग न मानहुँ तात। आरसुत पदकमल बिना बादि जाहँ लगी नात'**। एक सिक्ख ग्रंथ 'पंच प्रकाश' में आर्य का अपभ्रंश 'आरज' शब्द प्रयुक्त हुआ है–**'जो तुम सिख हमारे आरज । देहुँ शीख धरम के कारज।।'** दिल्ली के प्रसिद्ध बिड़ला मंदिर में लगाए गए अधिकांश शिलापटो पर **'आर्य'** शब्द ही लिखा हुआ है। जानकारी के अनुसार काशी के विश्वनाथ मंदिर में मुख्य द्वार पर **'आर्यधर्मेतराणाम् प्रवेशो निषेधः'** लिखा हुआ है। इस तरह हमारे सभी प्राचीन–नवीन धर्मग्रंथ एवं इतिहास में आर्य शब्द का ही प्रयोग हुआ है, हिन्दू शब्द का नहीं।

लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि अपने संस्थापक का मान रखने के लिए हिन्दू समाज की एक प्रमुख संस्था आर्य शब्द को स्वीकार न करके हिन्दू शब्द के प्रयोग की जिद्द पर अड़ी हुई है। इसी संस्था के एक अनुषंगी संस्था ने राही मसूम रज़ा द्वारा महाभारत धारावाहिक का डायलॉग लिखे जाने पर जब आपत्ति प्रकट की, तो लेखक ने उनसे प्रश्न किया कि जब आपको इस्लामी भाषा के शब्द 'हिन्दू' पर आपत्ति नहीं है तो फिर हर सम्भव संस्कृत भाषा के प्रयोग करने पर भी आपत्ति क्यों? उस पर उनकी बोलती बन्द हो गई। उनसे कोई उत्तर देते नहीं बना। आखिर कब तक हम इस विदेशी भाषा से चिपककर अपमान सहते रहेंगे, जिसका हमारे ग्रंथों में उल्लेख तक नहीं है। यदि हमें दुनिया में अपमान से बचना है और गर्व से मस्तक ऊँचा कर जीना है, तो निश्चित रूप से हमें निम्न दोहे को अपने व्यवहार में चरितार्थ करना होगा–

'ओउम है ईश हमारा, वेद हमारा धर्म।
आर्य है नाम प्यारा, यज्ञ हमारा कर्म।।

इसके अतिरिक्त और उपाय नहीं है–
'नान्यः पंथा विद्यते अयनाय'

–सूर्य देव चौधरी
झारखंड आर्य प्रतिनिधि सभा, रांची

theaI्यasamaj.org

thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 09 का शेष

स्वामी दयानन्द सरस्वती ...

देवी की पदवी दी। उसको सुशिक्षित करना वेदानुकूल बताया। स्त्री जाति को मनुष्य (अर्थात् पुरुष के) समान अधिकार देकर उसको दासत्व के बन्धन से छुटाया। अब उसी का परिणाम है कि प्रत्येक स्थान में क्या आर्यसमाजें और क्या सनातन सभायें, पुत्री पाठशालायें स्थापित कर रही है तथा आज कन्या गुरुकुल, महिला कालिज ओर कन्या महाविद्यालय स्थापित हो रहे हैं।

(16) विधवाओं का संकट दूर करने के लिए उन्होंने प्राचीन धर्मशास्त्रों के प्रमाणों से सिद्ध किया कि अक्षत योनि लड़कियों का पुनर्विवाह हर प्रकार से उपयोगी है। आपत्ति काल में अन्य विधवाओं का विवाह हो जाना भी उचित है, बजाय इसके कि वह व्यभिचारिणी (वैश्या) बन कर धर्म कर्म को नष्ट करें।

(17) गोरक्षा के लिए बलपूर्वक उन्होंने यत्न किया। ऋषि ने बताया कि भारत कृषि प्रधान देश है, अनाज की वृद्धि के लिए दूध, घृत, मलाई आदि श्रेष्ठ पदार्थों के लिए गोरक्षा की अत्यन्त आवश्यकता है।

अस्तु! स्वामी जी का उद्देश्य भली भांति मनुष्यमात्र की भलाई, संसार में शान्ति का फैलाना और भारत वर्ष को समृद्धिशाली तथा उन्नत बनाना था। वह चाहते थे कि भारत निवासी लोग भी जर्मनी आदि देशों में जाकर कला कौशल आदि सीख कर भारत की दरिद्रता का दूर करें। दयानन्द ने सदियों के सोये हुये भारत वर्ष को जगाया और ऐसा बलपूर्वक धक्का लगाया कि भारत निवासी तमाम जातियों के भीतर हलचल पैदा कर दी। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान सबने करवट बदली, अपने धर्म ग्रन्थों की व्याख्या में परिवर्तन आरम्भ किया तथा उसे वेदानुकूल फिलासफी के मुताबिक सिद्ध करने लगे। जो दयानन्द से पहले धर्म में बुद्धि का दखल नहीं होने देते थे, वे अब अपने मजहब को साइन्स, फिलासफी के अनुकूल सिद्ध करने लग गये।

अन्त में निवेदन है कि वह समय आ रहा है कि आगामी शताब्दी में हमारी सन्तानें देखेगी कि यूरोप, जर्मनी, अमेरिका आदि के विद्वान शताब्दी समारोह में आकर शरीक होंगे और दयानन्द की जय मनाने के लिये इस यज्ञ में आकर आहुतियां ड़ालेंगे। परमात्मा करे कि इस शताब्दी समारोह का यह आयोजन सफल हो और हम लोग ऋषि जीवन से प्रेरित होकर धार्मिक बल से अधिक दृढ़ हो जावें।

प्रस्तुतकर्ता : मनमोहन कुमार आर्य
निवास स्थान: 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड)
फोनः 09412985121 (मोबाइल)

डी.ए.वी. टोहाना में हुई यज्ञ रचाओ प्रतियोगिता

महात्मा आनन्द स्वामी स्मृति जन्मोत्सव के पावन पर्व पर डी.ए.वी. पानीपत जोन के अन्तर्गत आने वाली सभी डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इसी कड़ी में क्षेत्रीय स्तर पर यज्ञ रचाओ प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। इस प्रतियोगिता में डी.ए.वी. स्कूल टोहाना ने सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता का आयोजन दो चरणों में हुआ प्रथम चरण वैदिक प्रश्नोत्तरी व दूसरा चरण यज्ञ रचाओ प्रतियोगिता जिस में लगभग 12 टीमों ने सोत्साह हिस्सा लिया।

यज्ञ रचाओ कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री नीरज शर्मा, प्राचार्य, डी.ए.वी. जारखल ने की व मुख्य अतिथि प्रमुख आर्य समाजी श्री अर्जुन देव टोहाना रहे। निर्णायक की भूमिका श्री सत्यार्थी शास्त्री (पुरोहित आर्य समाज टोहाना), डॉ गणेश कौशिक (प्राचार्य महाराज अग्रसेन स्कूल टोहाना) व श्री जयगोपाल (नरवाना) ने अपने पूर्ण अनुभव के आधार पर निर्णय लिया।

डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली के दिशा निर्देश व क्षेत्रीय निदेशक डॉ. धर्मदेव जी के सद् प्रयासों के फलस्वरूप आयोजित यह यज्ञ रचाओ प्रतियोगिता अपने आप में एक अनूठी प्रतियोगिता है जिसमें संस्कार संवर्धन व भारतीय संस्कृति की जड़ों से जुड़ने की धारा को प्रमुखता दी जाती है।

आर्य समाज भिलाई नगर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज, सेक्टर–6, भिलाई का त्रिदिवसीय 55वाँ वार्षिकोत्सव 19,20 एवं 21 दिसम्बर 2014 को संपन्न हुआ। इसके साथ ही इस अथर्ववेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहूति भी संपन्न हुई। इस कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर हवन भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम ज्ञान सदन, नेहरु नगर, में भी आयोजित किया गया था।

भारत के ख्याति प्राप्त विद्वानों ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम का शुभारंभ झण्डा फहराकर आचार्य शिव कुमार शास्त्री के कर कमलों से हुआ। रोज प्रातः हवन, भजन व प्रवचन तथा सायं भजन व प्रवचन दो सत्रों में आयोजित किए गये। दोपहर में शालेय छात्रों के लिए विशेष भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। अंतिम दिन यज्ञ की पूर्णाहूति दी गई। अंत में ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

☞ पृष्ठ 06 का शेष

वेदों का एक ही सिद्धान्त ...

ज्ञान वेदों के अनुसार चलकर अपने जीवन को सफल व शान्तिमय बताते हुए मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर होना चाहिए।

वैसे सृष्टि नियम के विरुद्ध चमत्कारिक बातें सभी मतों में हैं, जैसे मुस्लिम भाई भी कहते हैं कि हमारे पैगम्बर मोहम्मद साहब ने एक अँगुली से चान्द के दो टुकड़े कर दिये, परन्तु हमारे पुराणों में सब से अधिक चमत्कारिक बाते हैं, जैसे हनुमान जी ने अपने बचपन से ही सूर्य को अपने मुख में रख लिया, कर्ण कुन्ती के कान से उत्पन्न हुआ, कृष्ण ने गोर्वधन पर्वत को अपनी चिटली अँगुली से उठा लिया, कृष्ण ने द्रोपदी का चीर बढ़ा दिया। भूत–प्रेत, गण्डा–डोरी, श्राद्ध–तर्पण, फलित ज्योतिष, ग्रहों का नाराज व खुश होना तथा मूर्ति पूजा व अवतार वाद को मानना अन्धविश्वास व पाखण्ड हैं, कारण ये सब बातें प्रकृति के नियम के विरूद्ध है। इसलिए इनको न मानकर वैदिक धर्म को मानना ही हर व्यक्ति के लिए श्रेयस्कर व लाभदायक होगा।

ईश्वर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने के लिए सन्ध्या करना, दूषित वातावरण को शुद्ध करने के लिए हवन करना, शरीर को स्वस्थ रखते हुए यम–नियमों से समाधि तक पहुँचने के लिए अष्टांग योग करना, दूसरों का भलाई के लिए परोपकार करना तथा वेदों सहित सभी आर्ष ग्रन्थों को पढ़ना और उनके अनुसार जीवन बनाना आदि वैदिक धर्म के मुख्य सिद्धान्त हैं। ये तर्क, बुद्धि व विज्ञान संगत कर्म हैं, जो मनुष्य को स्वस्थ रखते हुए सुखी जीवन बनाने में पूर्ण सहायक हैं। इसलिए यदि हम अपने जीवन को स्वस्थ रखना चाहते हैं तो हमें अन्यों मतों वे पंथों को छोड़कर वैदिक धर्म को अपनाना चाहिए जिससे हम अपने परिवार, समाज, राष्ट्र व केवल मानव–मात्र ही नहीं बल्कि प्राणी–मात्र के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अपने जीवन में सफलता की ऊँचाईयों को छूते हुए मोक्ष के अधिकारी बनें। इससे उत्तम अन्य कोई मार्ग नहीं।

180 महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला)
कोलकता–700007
फोन. : 22183825

thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2015-17
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 14-15/1/2015
रजिस्ट्रेशन नं. आर0 एन0 आई0 39/57

डी.ए.वी. पटेल नगर के छात्र पहुंचें आर्य समाज (अनारकली)

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पटेल, दिल्ली नगर के बच्चों ने आर्यसमाज (अनारकली) में साप्ताहिक हवन में भाग लिया। हवन की मुख्य यजमान पाठशाला की प्रधानाचार्या रश्मि गुप्ता जी थी। पाठशाला के छात्र, छात्राओं, संगीत आचार्य तथा अध्यापको ने हवन में भाग लिया। पाठशाला के उपप्रधान श्री रामनाथ सहगल जी तथा

मैनेजर श्री जी आर साहनी जी तथा अनेक विद्वान आचार्य इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। शास्त्री जी ने बच्चों को शिक्षाप्रद, ज्ञानवर्धन की रुचिकरि अनेक बातें बताईं। बच्चों ने वैदिक मंत्रो के उच्चारण के साथ-साथ संगीत बाद्यों के साथ भजन गाए! कार्यक्रम के बाद पाठशाला की ओर से प्रसाद वितरण किया गया।

डी.ए.वी. चीका में बहुकुण्डीय वैदिक यज्ञ

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर इस महान विभूति को स्मरण करते हुए डी.ए.वी. चीका में एक बहुकुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. एम सी शर्मा, कोषाध्यक्ष, डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति उपस्थित हुए।

डी.ए.वी. में आर्य विचारों के प्रचार में आई नई क्रान्ति का श्रेय आर्य रत्न पूनम सूरी को देते हुए मुख्य अतिथि ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। स्वामी जी के जीवन से प्रेरणा ग्रहण कर आगे बढ़ने की बात करते हुए श्री शर्मा ने विद्यालय के प्राचार्य को बधाई दी और शुभकामनायें दी।

डी.ए.वी. ईस्ट आफ लोनी में हुआ वार्षिक प्रदर्शनी का आयोजन

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल ईस्ट आफ लोनी रोड दिल्ली में वार्षिक प्रदर्शनी का भव्य आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का विषय था– ''पंचतत्त्व'' अर्थात आकाश, वायु, अग्नि, जल तथा पृथिवी। इस प्रदर्शनी के माध्यम से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड तथा मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन में इन पाँचों तत्त्वों के महत्त्व को प्रदर्शित किया गया। छात्रों द्वारा जहाँ तत्त्वों के महत्वपूर्ण योगदान को दर्शाया गया वहीं रचनात्मकता का परिचय प्रदान करते हुए यह भी अवगत कराया कि सभी तत्त्व एक दूसरे के पूरक हैं तथा उनका अपना-अपना अतुलनीय महत्त्व है। छात्रों द्वारा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड भी प्रदर्शित किया गया जिसमें यह दिखाया गया कि हमारे ब्रह्माण्ड में पाँचों तत्त्व किस भूमिका का निर्वाह करते हैं। छात्रों ने जहाँ वैदिक एवं भारती संस्कृति के अनुसार पंचतत्त्वों का प्रदर्शन किया वहीं पाश्चात्त्य देशों में इन तत्त्वों को किस रूप में स्वीकारा जाता है यह भी प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी में एक से बढ़कर एक उत्कृष्ट प्रतिकृतियाँ सभी के आकर्षण का विषय रहीं।

प्रदर्शनी के मुख्य अतिथि श्रीमान एस.के. शर्मा जी (डायरेक्टर, डी.ए.वी.सी.एम.सी.), के अतिरिक्त विशिष्ट अतिथि श्रीमान नानकचन्द जी (विद्यालय प्रबन्धक) एवं अनेक सहयोगी विद्यालयों की प्रधानाचार्या एवं अध्यापक मण्डल सम्मानित अतिथि के रुप में उपस्थित थे। मुख्य अतिथि ने कहा कि विद्यालय में शिक्षा का यह प्रयोग इसके उज्ज्वल भविष्य की ओर एक सार्थक प्रयास है।'' उन्होंने विद्यालय परिवार को, छात्रों को मार्गदर्शित करते रहने के लिए बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रदान की। विद्यालय प्रबन्धक श्रीमान नानकचन्द जी ने कहा कि यह प्रदर्शनी अत्यन्त व्यवस्थित कार्य का प्रदर्शन है तथा इसी प्रकार के कार्यों द्वारा छात्रों में रचनात्मकता का विकास होता है।'' विद्यालय की प्राचार्या श्रीमति समीक्षा शर्मा ने सभी अतिथियों का हार्दिक धन्यवाद व्यक्त किया।

आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के तत्वावधान में आर्य वीर दल मुम्बई द्वारा आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर आर्य समाज सान्ताक्रुज के प्रागंण में आवासीय शिविर रखा गया।

शिविर में शारीरिक पाठ्यक्रम का संचालन द्रोणस्थली तपोवन देहरादून से आईं सुव्रती आर्या, श्रीमती वीणा चतुर्वेदी पाणिनी कन्या गुरुकुल वाराणसी एवं अंजलि गोस्वामी एवं सौरभ सिंह मुम्बई ने किया। आर्य वीर दल के बौद्धिकाध्यक्ष ब्र. अरूणकुमार ''आर्यवीर''ने शिविर में बौद्धिक प्रशिक्षक के रूप में सेवाएं दीं।

शिविर में लगभग 40 कन्याओं ने भाग लिया। प्रातः 5 बजे से रात्रि 10 बजे तक चलनेवाली व्यस्त दिनचर्या में इन वीरांगनाओं को आसन–प्राणायाम, कुंग–फु, कराटे, सर्वांगसुन्दर व्यायाम, सूर्यनमस्कार आदि के व्यायाम तथा विभिन्न खेल खिलाए गये। ईश्वर–जीव–प्रकृति, वेद, सृष्टि रचना, पंचमहायज्ञ, 16 संस्कार, वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था की जानकारी सरल ढंग से दी। बौद्धिक कक्षाओं में स्थानीय विद्वानों डॉ. निकिश, श्रीमति निर्मला पारधी, श्री योगेश शास्त्री, श्री सन्दीप मुक्ति, योग व व्यवहारिक जीवन में सफलता स्वस्थता आदि विषयों पर भी प्रकाश डाला। रात्रि की मनोरंजन कक्षा में महापुरुषों के चलचित्र एवं अन्य उपयोगी चलचित्र दिखाए गए।

वीरांगनाओं ने यज्ञ के अवसर पर ईश्वरोपासना, स्वाध्याय, अग्निहोत्र आत्मनिरीक्षणादि करने का व्रत लिया।

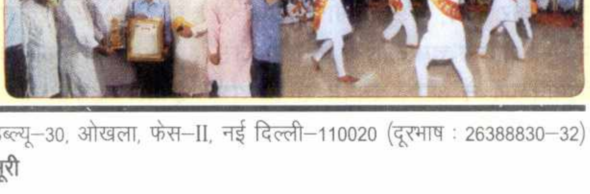

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.**, डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601 सम्पादक – **पूनम सूरी**